CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साधनिका

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थागार,
भरतनिधि, [illegible]
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साधनिका

3217
आम्नाय-ग्रन्थालय,
[illegible], करौंदी
वाराणसी-5

जगद्गुरु श्री चैतन्य-संप्रदायाचार्य
श्री पुरुषोत्तम गोस्वामी 'राजाजी'

श्री चैतन्य प्रेम संस्थान
गम्भीरा / जयसिंह घेरा
श्रीधाम वृन्दावन, उ. प्र. - 281121

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री चैतन्य प्रेम संस्थान, जयसिंह घेरा, वृन्दावन
के लिए श्रीमती शिरोमणी देवी द्वारा मुद्रित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुक्रमणिका

श्रीचतुःश्लोकी भागवत
श्रीगोविन्द - वन्दना
श्रीगीतम्
श्रीदशावतार - स्तोत्र -
श्रीजयदेव कवि विरचित 'श्रीमंगलगीतम्'
श्री श्रीजीवगोस्वामिपाद विरचित श्रीयुगलाष्टकम्
श्रीराधा स्तवन
श्रीविष्णोरष्टाविंशतिनामस्तोत्रम्
श्रीगौर-गीति
श्रीकृष्ण-गीति
श्रीनाम - ध्वनियाँ
पाठ कीर्त्तन
श्रीराधाकृपाकटाक्ष स्तवराज
श्री
श्रीजगन्नाथाष्टकम्
श्रीशिक्षाष्टकम्
श्रीमङ्गलाचरणानि
श्रीचैतन्याष्टकम्
श्रीशचीतनयाष्टकम्
श्रीनवद्वीपचन्द्रस्तवराज
श्रीगौरांग महाप्रभु की आरती
श्रीगुरुदेवाष्टकम्
श्रीगुरु - वन्दना
श्रीगौरांगमहाप्रभु-प्रणामः
श्री श्रीराधारमण जी की सांध्य आरती
आरती कुंजविहारी की
श्रीतुलसी-आरती
श्रीमद्भागवत की आरती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री चतुःश्लोकी भागवत

श्रीभगवानुवाच

ज्ञानं परमगुह्यं मे यद् विज्ञानसमन्वितम् ।
सरहस्यं तदङ्गं च गृहाण गदितं मया ॥30॥

प्रेमाभक्ति और उसके विविध साधनों से युक्त, ब्रह्म-ज्ञान से भी अधिक गोपनीय अपने स्वरूप का विज्ञानात्मक अनुभव से समन्वित ज्ञान तुम्हें देता हूँ; हे ब्रह्माजी ! तुम उसे ग्रहण करो.

यावानहं यथाभावो यद्रूप गुणकर्मकः ।
तथैव तत्त्वविज्ञानमस्तुते मदनुग्रहात् ॥31॥

मेरा जितना विस्तार है, मेरे जो लक्षण हैं, मेरे जितने और जैसे रूप, गुण और लीलाएं हैं - मेरी कृपा से तुम उनका तत्त्व-विज्ञान ठीक वैसे ही अनुभव करो.

अहमेवासमेवाग्रे नान्यद् यत् सदसत् परम् ।
पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम् ॥32॥

सृष्टि के पूर्व में केवल मैं ही था, मेरे अतिरिक्त न स्थूल था न सूक्ष्म तथा दोनों का कारण अज्ञान भी नहीं था. जहाँ यह सृष्टि नहीं है, वहाँ मैं ही हूँ, और इस सृष्टि के रूप में जो कुछ भी प्रतीत होता रहा है, वह भी मैं ही हूँ; और जो कुछ बचा है वह भी मैं ही हूँ.

ऋतेऽर्थं यत्प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि ।
तद्विद्यादात्मनो मायां यथाऽऽभासो यथातमः ॥33॥

वास्तव में न होने पर भी जो कुछ वस्तु, मेरे अतिरिक्त मुझ परमात्मा में, मिथ्या ही प्रतीत हो रही है, अथवा विद्यमान होने पर भी (आकाशमण्डल के नक्षत्रों में राहु की भाँति) मेरी प्रतीति नहीं होती, मेरी अविद्यात्मक माया शक्ति को ही जानना चाहिए.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावतेष्वनु ।

प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहम् ।। 34 ।।

जैसे प्राणियों के पञ्चभूत रचित छोटे-बड़े शरीरों में आकाशादि पञ्चमहाभूत उन शरीरों के कार्यरूप से निर्मित होने के कारण प्रवेश करते भी हैं, और पहले से भी उन स्थानों और रूपों में कारण रूप से विद्यमान रहने के कारण प्रवेश नहीं भी करते हैं; वैसे ही उन प्राणियों के शरीरों की दृष्टि से मैं उनमें आत्म रूप में प्रविष्ट हूँ, और आत्मा की दृष्टि से अपने अतिरिक्त और कोई वस्तु न होने के कारण उनमें प्रवेश नहीं करता हूँ.

एतावदेव जिज्ञास्यं तत्त्वजिज्ञासुनाऽऽत्मनः ।

अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत् स्यात् सर्वत्र सर्वदा ।। 35 ।।

'यह नहीं, यह नहीं' -- इस प्रकार निषेध की पद्धति से और 'यह है, यह है' -- इस अन्वय की पद्धति से यही सिद्ध होता है कि सर्वातीत एवं सर्वस्व रूप भगवान ही सर्वदा सर्वत्र स्थित है, वही वास्तविक तत्त्व है. तत्त्व जिज्ञासुओं को इतना ही जानने की आवश्यकता है.

एतन्मतं समातिष्ठ परमेण समाधिना ।

भवान् कल्पविकल्पेषु न विमुह्यति कर्हिचित् ।। 36 ।।

हे ब्रह्माजी ! तुम अविचल समाधि द्वारा मेरे इस सिद्धान्त में पूर्ण निष्ठा प्राप्त कर लो. इससे कल्प-कल्पान्तर में विविध प्रकार की सृष्टि - रचना करते हुए भी तुम कभी मोहग्रस्त नहीं होवोगे.

(भाग 2.9.30-36)

+++++

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीगोविन्द - वन्दना

ॐ नमो बिश्वरूपाय विश्वस्थित्यन्त हेतवे ।
विश्वेश्वराय विश्वाय गोविन्दाय नमो नमः ।। 1 ।।

विश्वरूप ! विश्व की स्थति एवं प्रलय के हेतु विश्वेश्वर विश्वमूर्ति श्रीगोविन्द को नमस्कार है.

नमो विज्ञानरूपाय परमानन्द रूपिणे ।
कृष्णाय गोपिनाथाय गोविन्दाय नमो नमः ।। 2 ।।

विज्ञानरूप परमानन्द श्रीकृष्ण, गोपीनाथ श्रीगोविन्द को बारम्बार नमस्कार है.

नमः कमलनेत्राय नमः कमल मालिने ।
नमः कमलनाभाय कमलापतये नमः ।। 3 ।।

कमलनेत्र, कमल - मालाधारी, नाभि से जिनके कमल प्रस्फुटित है, ऐसे कमलापति गोविन्द को नमस्कार है.

बर्हापीड़ाऽभिरामाय रामायाकुण्ठमेधसे ।
रमामानसहंसाय गोविन्दायं नमो नमः ।। 4 ।।

मोरमुकुट की शोभा से ब्रजगोपियों के चित्त को हरने वाले, श्रीराधा के हृदय सरोवर में विहार करने वाले हंस श्रीगोविन्द को बारम्बार नमस्कार है.

कंसवंश विनाशाय केशिचाणूर घातिने ।
वृषभध्वजवन्द्याय पार्थसारथये नमः ।। 5 ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कंस के दैत्यवंश के विनाशक, केशि और चाणूर नामक राक्षसों का वध करने वाले, शिव और देवताओं के द्वारा वन्दित अर्जुन के सारथि हे गोविन्द, आपको नमस्कार है.

वेणुवादनशीलाय गोपालायाहिमर्दने ।
कालिन्दीकूललीलाय लोलकुण्डलधारिणे ।। 6 ।।

कालिन्दी तट पर कालियमर्दन कर वेणु बजाने वाले सुंदर कुण्डलधारी गोपाल को नमस्कार है

वल्लवी नयनाम्भोज मालिने नृत्यशालिने ।
नमः प्रणतपालाय गोविन्दाय नमो नमः ।। 7 ।।

व्रजगोपियाँ आपके वनमाली नटवर स्वरूप का दर्शन कर आनन्दित होती हैं. हे शरणागत प्रतिपालक गोविन्द, आपको बारम्वार नमस्कार है.

नमः पापप्रणाशाय गोवर्धनधराय च ।
पूतनाजिवितान्ताय तृणावर्त्ताऽसुहारिणे ।। 8 ।।

पूतना के जीवन का अन्त करने वाले, तृणावर्त्त नामक असुर के संहारक तथा समस्त पापों के नाशक गोवर्धनधारी को नमस्कार है.

निष्कलाय विमोहाय शुद्धायाऽशुद्ध वैरिणे ।
अद्वितीयाय महते श्रीकृष्णाय नमो नमः ।। 9 ।।

भक्तों को आकृष्ट करने वाले, अभक्तों के विरोधी, अखण्ड, अद्वितीय, अनंत श्रीकृष्ण को बारम्वार नमस्कार है.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रसीद परमानन्द प्रसीद परमेश्वर ।

आधिव्याधिभुजङ्गेन दंष्टमामुद्धर प्रभो ।। 10 ।।

हे परमानन्द ! हे परमेश्वर ! आप मुझ पर प्रसन्न हों. प्रभो, आधि - व्याधि रूप सर्प के दंश से मेरा उद्धार करो.

श्रीकृष्ण रुक्मिणीकान्त गोपीजन मनोहर ।

संसारसागरे मग्नं मामुद्धर जगद्गुरो ।। 11 ।।

गोपियों के मन को हरण करने वाले, रुक्मिणीकान्त श्रीकृष्ण, मैं भवसागर में डूबा हुआ हूँ, हे जगद्गुरु ! कृपया मुझे उबारिये.

केशव क्लेशहरण नारायण जनार्दन ।

गोविन्द परमानन्द मां समुद्धर माधव ।। 12 ।।

हे केशव, हे नारायण, आप अपने भक्तों के क्लेशों का हरण करके अपने निजजनों को सुख प्रदान करते हैं, आप परमानन्द स्वरूप गोविन्द हैं. हे माधव ! मेरा उद्धार कीजिये.

+ + + + +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीगीतम्

राधे ! जय जय माधवदयिते !, गोकुल - तरुणीमण्डल - महिते ।
दामोदर - रतिवर्धन - वेशे ! हरिनिष्कुट - वृन्दाविपिनेशे ! ।।1 ।।

कृष्णप्रेयसि श्रीमती राधिके, आपकी जयजयकार हो: ब्रजगोपियों द्वारा पूजित आपका मनोहर वेश श्रीकृष्ण की प्रीति को बढ़ाने वाला है, तथा श्रीकृष्ण के उपवन श्रीवृन्दावन की आप अधीश्वरी हो.

वृषभानुदधि - नवशशिलेखे !,
ललितसखि ! गुणरमितविशाखे ! ।
करुणां कुरु मयि करुणाभरिते !,
सनकसनातन - वर्णितचरिते ! ।। 2 ।।

आप श्रीवृषभानुरूप - समुद्र से उत्पन्न होने वाली नवीन चन्द्रलेखा हो, ललिता की प्यारी सखी हो:सौहार्द एवं श्रीकृष्ण की अनुकूलता आदि गुणों के द्वारा विशाखा आदि को आनन्दित करने वाली हो,करुणा से परिपूर्ण हो, एवं आपका करुणामय चरित्र, श्रीसनक-सनातन आदि ऋषियों के द्वारा वर्णितहै, अतः मेरे ऊपर भी कृपा कर दीजिये.

गौराङ्ग न हइत, केमन हइत, केमने धरिताम देह ।
राधार महिमा, प्रेमरस - सीमा, जगते जानात' के ।।
मधुर वृन्दा विपिन माधुरी, प्रवेश चातुरी - सार ।
बिरज - युवती, भावेर भकति, शकति हइत कार ।।
गाओ पुनः पुनः, गौराङ्गेर गुण, सरल हइया मन ।
ए भव - सागरे, एमन दयाल, ना देखिये एकजन ।।
गौर बलिया, ना गेल गलिया, केमन पाइल सिधि ।
'वासुर' हिया, पाषाण दिया, गढ़ियाछे कोन विधि।।

*****

आम्नाय-ग्रन्थालय, चरलनिधि, करौंदी वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गौरांगेर दुटी पद, यार धन संपद, से जाने भकतिरस सार ।
गौरांगेर मधुर लीला, यार कर्णे प्रवेशिला, हृदय निर्मल भेल तार ।।
ये गौरांगेर नाम लय, तार हय प्रेमोदय, तारे मुञि याइ बलिहारि ।
गौरांग-गुणेते झुरे, नित्यलीला तारे स्फुरे, से जन भकति-अधिकारी ।।
गौरांगेर संगिगणे, नित्यसिद्ध करि माने, से याय व्रजेन्द्रसुत पास ।
श्रीगौड़मण्डल-भूमि, येवा जाने चिन्तामणि,-तार हय व्रजभूमे वास ।।
गौर-प्रेमरसार्णवे, से तरंगे येवा डूबे, से राधामाधव-अन्तरङ्ग ।
गृहे वा वनेते थाके, हा गौरांग बले डाके, 'नरोत्तम' माँगे तार सङ्ग ।।

\+ + + + +

श्रीगुरुचरणपद्म, केवल-भकतिसद्म, वन्दों मुञि सावधान मने ।
याँहार प्रसादे भाइ, ए भव तरिया याइ, कृष्णप्राप्ति हय याहा हने ।।
गुरुमुखपद्मवाक्य, हृदि करि महाशक्य, आर ना करिह मने आशा ।
श्रीगुरुचरणे रति, एइ से' उत्तम-गति, ये प्रसादे पूरे सर्व आशा ।।
चक्षुदान दिला येइ, जन्मे जन्मे प्रभु सेइ, दिव्यज्ञान हृदे प्रकाशित ।
प्रेमभक्ति याहा हैते, अविद्या विनाश याते, वेदे गाय याँहार चरित ।।
श्रीगुरु करुणासिन्धु, अधम जनार बन्धु, लोकनाथ लोकेर जीवन ।
हा हा ! प्रभो ! कर दया, देह मोरे पदछाया, ए अधम लइल शरण ।।

\+ + + + +

सइ ! केबा शुनाइले श्याम नाम !
कानेर भितर दिया, मरमे पशिल गो, आकुल करिल मोर प्राण ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ना जानि कतेक मधु, श्यामनामे आछेगो, वदन छाड़िते नाहि पारे ।
जपिते जपिते नाम, अवश करिल गो, केमने पाइब सइ तारे ।।
नाम - परतापे यार, ऐछन करिल गो, अंगेर परशे किबा हय ।
येखाने वसति तार, नयन देखिया गो, युक्ती - धरम कैछे रय ।।
पासरिते करि मने, पासरा ना याय गो, कि करिब कि हबे उपाय ।
कहे द्विज 'चण्डिदासें', कुलवती कुल नाशे, आपनार यौवन याचाय ।।

\+ + + + +

राधाकृष्ण प्राण मोर जुगल किशोर ।
जीवने मरणे नित्ये गति आर नांहि मोर ।।
कालिन्दी कूले केलि कदम्बेर बन ।
रतन बेदीर उपर बसावो दूजन ।।
श्याम गौरि अंगे दीवो चन्दनेर गन्ध ।
चामर दुलावो कवे हेरि मुखचन्द्र ।।
गाँथियाँ मालती माला दीवो दुहार गले ।
अधरे तुलिया दीवो कर्पूर ताम्बूले ।।
ललिता - विशाखा आदि जत सखीवृन्द ।
आज्ञाय करिवो सेवा चरणारविन्द ।।
श्रीकृष्णचैतन्य प्रभूर दासेर अनुदास ।
सेवा अभिलाष करे 'नरोत्तमदास' ।।

+++++

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीदशावतार स्तोत्र

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम् ।
विहितवहित्रचरित्रमखेदम् ।।
केशव धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे ।। 1 ।।

हे जगदीश, हे हरि ! आपने प्रलय सागर में नौकारूप में अनायास ही वेद समूह को धारण किया था. मत्स्यरूपधारी श्रीकृष्ण, आपकी जय हो.

क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे ।
धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे ।।
केशव धृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे ।। 2 ।।

हे जगदीश, हे हरि ! अपनी विंस्तृत पीठ पर पृथ्वी को आपने धारण किया, जिससे आपकी पीठ पर पृथ्वी धारण के चिह्न पड़ गये हैं. कच्छपरूपधारी श्रीकृष्ण, आपकी जय हो.

वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना ।
शशिनिकलङ्ककलेव निमग्ना ।।
केशव धृतशूकररूप जय जगदीश हरे ।। 3 ।।

हे हरि, हे जगदीश ! आपके दाँतों के अग्रभाग पर विराजित पृथ्वी, चन्द्रमा की कलंक रेखा के समान शोभित है. बराहअवतारी श्रीकृष्ण, आपकी जय हो.

तव करकमलवरे नखमद्भुतश्रृङ्गम् ।
दलितहिरण्यकशिपुतनभृङ्गम् ।।
केशव धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे ।। 4 ।।

नरसिहावतार को धारण करने वाले कृष्ण, आपके कोमल करकमलों के विलक्षण नखाग्रों से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आपने हिरण्यकशिपु के शरीर रूपी भ्रमर का विदारण किया. हे जगदीश, आपकी जय हो.

छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन ।
पदनखनीरजनितजनपावन ॥
केशव धृतवामनरूप जय जगदीश हरे ॥5॥

हे जगदीश, हे हरि ! आपने अद्भुत वामनावतार धारण कर बलि नामक दैत्य को छला और चरण के नखकमल से संसार को पवित्र किया. वामनरूपधारी श्रीकृष्ण, आपकी जय हो.

क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापम् ।
स्नपयसि पयसि शमितभतापम् ॥
केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे ॥ 6 ॥

परशुधारीऋषि के स्वरूप को धारण करने वाले कृष्ण, आपने असुरों के रुधिर में जगत को स्नान कराकर संसार के पापों का और तीनों (दैहिक-दैविक-भौतिक) तापों का नाश किया. हे हरि, हे जगदीश, आपकी जय हो.

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयम् ।
दशमुखमौलिबलि रमणीयम् ॥
केशव धृतरामशरीर जय जगदीश हरे ॥ 7 ॥

हे रामचन्द्र के रूप को धारण करने वाले श्रीकृष्ण ! आपने इन्द्रादि दश दिक्पतियों के द्वारा वाञ्छित राक्षसराज रावण के दश मुखों को दशों दिशाओं को बलिस्वरूप अर्पण किया. हे जगदीश ! आपकी जय हो.

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभम् ।
हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

केशव धृतहलधररूप जय जगदीश हरे ॥ 8 ॥

हे हल को धारण करने वाले श्रीकृष्ण ! आपने गौर शरीर पर मेघ के समान नीलाम्बर धारण कियाहै, जो हल के डर से आई हुई यमुना के सदृश प्रतीत होती है. है जगदीश, हे हरि, आपकी जय हो.

निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातम् ।

सदयहृदयदर्शितपशुघातम् ॥

केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे ॥ 9 ॥

बुद्ध रूप धारण करने वाले श्रीकृष्ण ! आपने पशु-हिंसा विषयक श्रुतियों की निन्दा की है. दयायुक्त अन्तःकरण वाले जगदीश, हे हरि, आपकी जय हो.

म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम् ।

धूमकेतुमि व किमपि करालम् ॥

केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे ॥ 10 ॥

हे हरि, हे जगदीश ! आपने म्लेच्छों के वध के लिए धूमकेतु के समान अपूर्व तलवार धारण की है. हे कल्कि अवतारी श्रीकृष्ण, आपकी जय हो.

श्री जयदेवकवेरिदमुदितमुदारम् ।

श्रुणु सुखदं सुभदं भवसारम् ॥

केशव धृतदशविधरूप जय जगदीश हरे ॥ 11 ॥

हे दशविध रूप धारण करने वाले श्रीकृष्ण ! आपकी जय हो. और हे भक्तजनो ! श्रीजयदेव कविरचित यह मनोहर, सुख तथा कल्याण देने वाला संसार का तत्त्व स्वरूप स्तोत्र श्रवण करो.

[श्रीजयदेव कविकृत श्रीगीतगोविन्द काव्य से]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीजयदेव कवि विरचित 'श्रीमंगलगीतम्'

श्रितकमलाकुचमण्डल धृतकुण्डल ए ।

कलितललितवनमाल जय जयदेव हरे ।। 1 ।।

श्रीराधा के वक्षस्थल में आश्रय वाले, कुण्डलधारी, मनोहर वनमाला से सुशोभित हे देव, हे हरि, आपकी जय हो, जय हो.

दिनमणिमण्डलमण्डन भवखण्डन ए ।

मुनिजनमानसहंस जय जयदेव हरे ।। 2 ।।

सूर्य्यमण्डल के आभूषण, सासारिक दुःख का विनाश करने वाले, मुनिजनों के चित्त रूपी सरोवर में विहार करने वाले हंस-स्वरूप हे देव, हे हरि, आपकी जय हो, जय हो.

कालियविषधरगञ्जन जनरंजन ए ।

यदुकुलनलिन दिनेश जय जयदेव हरे ।। 3 ।।

कालिय सर्प के मद का दमन करने वाले, भक्तजनों के आनन्ददाता, यदुकुलरूपी कमल के जीवन-सूर्य, हे देव, हे हरि, आपकी जय हो, जय हो.

मधुमुरनरकविनाशन गरुड़ासन ए ।

सुरकुलकेलिनिदान जय जयदेव हरे ।। 4 ।।

मधु, मुर और नरक नाम असुरों के विनाशक, गरुड़-वाहन, देवताओं के आश्रय, हे देव, हे हरि, आपकी जय हो, जय हो.

अमलकमलदललोचन भवमोचन ए ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्रिभुवनभुवननिधान जय जयदेव हरे ।। 5 ।।

विमल कमल दल के समान विशाल नेत्र वाले, ससार रूपी बन्धन से मुक्ति देने वाले, तीनों लोक की सृष्टि के पालक हे देव, हे हरि, आपकी जय हो, जय हो.

जनकसुताकृतभूषण जितदूषण ए ।

समरशमितदशकण्ठ जय जयदेव हरे ।। 6 ।।

जानकी सीता के आभूषण, दूषण नामक राक्षस पर विजय प्राप्त करने वाले, युद्ध में दशानन रावण का वध करने वाले, हे देव, हे हरि, आपकी जय हो, जय हो.

अभिनवजलधरसुन्दर धृतमन्दर ए ।

श्रीमुखचन्द्रचकोर जय जयदेव हरे ।। 7 ।।

नवल-श्याम-मेघ के समान कान्ति वाले, समुद्रमन्थन में मन्दराचल को कच्छप रूप में पीठ पर धारण करने वाले, लक्ष्मी (श्रीराधा) मुखचन्द्र के चकोर, हे देव, हे हरि, आपकी जय हो, जय हो.

तव चरणे प्रणतावयमिति भावय ए ।

कुरुकुशलं प्रणतेषु जय जयदेव हरे ।। 8 ।।

हे हरि ! हम आपके चरणों मे प्रणाम करते हैं, उसे स्वीकार कर हम शरणागतों का कल्याण कीजिये. हे देव, आपकी जय हो, जय हो.

श्रीजयदेवकवेरिदं कुरुते मुदम् ।

मङ्गलमुज्ज्वलगीतं, जय जयदेव हरे ।। 9 ।।

श्रीजयदेव कवि का यह मंङ्गल काव्य, उज्ज्वल-प्रेमाभक्ति-रस का यह गान, सवका आनन्द वर्द्धन करे. हे देव, हे हरि, आपकी जय हो, जय हो.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री श्रीजीवगोस्वामिपाद विरचित
श्रीयुगलाष्टकम्

कृष्ण प्रेममयी राधा, राधाप्रेममयो हरिः ।

जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम ।। ।।

राधा प्रेममय श्रीकृष्ण एवं कृष्ण प्रेममयी श्रीराधा, जीवन में, मरण में, सर्वदा ही युगल राधाकृष्ण मेरी गति हैं.

कृष्णस्य द्रविणं राधा, राधाया द्रविणं हरिः ।

जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम ।। 2 ।।

राधा की सम्पत्ति कृष्ण और कृष्ण की सम्पत्ति राधा, जीवन में, मरण में, सर्वदा ही युगल राधाकृष्ण मेरीगति हैं.

कृष्णप्राणमयी राधा, राधाप्राणमयो हरिः ।

जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम ।। 3 ।।

कृष्ण जिनके प्राण हैं - ऐसी राधा, तथा राधा जिनकी प्राणेश्वरी हैं - वे श्रीकृष्ण, जीवन में, मरण में, सर्वदा ही युगल राधाकृष्ण मेरी गति हैं.

कृष्णद्रवमयी राधा, राधाद्रवमयो हरिः ।

जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम ।। 4 ।।

कृष्णरस से परिपूरित राधा तथा राधारस में निमग्न कृष्ण, जीवन में, मरण में, सर्वदा ही युगल राधाकृष्ण मेरी गति हैं.

कृष्णगृहस्थिता राधा, राधागृहस्थितो हरिः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृष्णगृहस्थिता राधा, राधागृहस्थितो हरिः ।

जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम ।। 5 ।।

राधा-हृदय में वास करने वाले श्रीकृष्ण तथा कृष्ण-हृदय में विलास करने वाली श्रीराधा, जीवन में, मरण में, सर्वदा ही युगल राधाकृष्ण मेरी गति हैं.

कृष्णचित्तस्थिता राधा, राधाचित्तस्थितो हरिः ।

जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम ।। 6 ।।

श्रीकृष्ण की चेतना में व्याप्त राधा तथा राधा की चेतना में स्थित श्रीकृष्ण, जीवन में, मरणे में,सर्वदा ही युगल राधाकृष्ण मेरी गति हैं.

नीलाम्बरधरा राधा, पीताम्बरधरो हरिः ।

जीवने निधने नित्यं, राधकृष्णौ गतिर्मम ।। 7 ।।

नीलवसनधारी राधिका, एवं पीताम्वर से सुशोभित श्रीकृष्ण, जीवन में, मरण में, सर्वदा ही युगल राधाकृष्ण मेरी गति हैं

वृन्दावनेश्वरी राधा, कृष्णो वृन्दावनेश्वरः ।

जीवने निधने नित्यं, राधाकृष्णौ गतिर्मम ।। 8 ।।

वृन्दावन की अधीश्वरी श्रीराधा तथा वृन्दावन के स्वामी श्रीकृष्ण, जीवन में, मरण में, सर्वदा ही युगल राधाकृष्ण मेरी गति हैं.

✣ ✣ ✣ ✣ ✣

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीराधा - स्तवन

राधे मेरी स्वामिनी, मैं राधे की दास ।
जनम - जनम मोहे दीजियो, युगल चरण में वास ।। 1 ।।

राधे मेरी स्वामिनी, मैं राधे की दास ।
जनम-जनम मोहे दीजियो, वृन्दावन में वास ।। 2 ।।

सब द्वारन कौं छाँड़िके, आई तिहारे द्वार ।
अहो भानु की लाड़िली, टुक मेरी ओर निहार ।। 3 ।।

न धनं, न जनं, न सुन्दरीं, कवितां वा जगदीश कामये ।
मम जन्मनि जन्मनीश्वरे, भवताद्भक्तिरहेतुकी त्वयि ।। 4 ।।

श्रीविष्णोरष्टाविंशतिनामस्तोत्रम्

अर्जुन उवाच

किञ्चुनाम सहस्त्राणि जपन्ते च पुनः पुनः ।
यानि नामानि दिव्यानि तानि चाचक्ष्व केशव ।।

अर्जुन ने श्रीकृष्ण से पूछा : आप के सहस्र नाम हैं, उनको क्यों बार-बार जपना है. केशव ! आप के जो दिव्य नाम हैं, कृपया उन्हें बताइये.

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीभगवानुवाच

मत्स्यं कूर्मं वराहं च वामनं च जनार्दनम् ।
गोविन्दं पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम् ।।

पद्मनाभं सहस्राक्षं वनमालि हलायुधम् ।
गोवर्धनं हृषीकेशं वैकुण्ठं पुरुषोत्तमम् ।।

विश्वरूपं वासुदेवं रामं नारायणं हरिम् ।
दामोदरं श्रीधरं च वेदाङ्गं गरुड़ध्वजम् ।।

अनन्तं कृष्ण गोपालं जपतो नास्ति पातकम् ।
गवां कोटि प्रदानस्य अश्वमेधशतस्य च ।।

कन्यादान सहस्राणां फलं प्राप्नोति मानवः ।
अमायां वा पौर्णमास्यामेकादश्यां तथैव च ।।

सन्ध्याकाले स्मरेन्नित्यं प्रातःकाले तथैव च ।
मध्याह्ने च जपेन्नित्यं सर्व पापैः प्रमुच्यते ।।

भगवान ने कहा ! मत्स्य, कूर्म, वराह, वामन, जनार्दन, गोविन्द, पुण्डरीकाक्ष, माधव, मधुसूदन, पद्मनाभ, सहस्राक्ष, वनमाली, हलायुध, गोवर्धनधारी, हृषीकेश, वैकुण्ठ, पुरुषोत्तम, विश्वरूप, वासुदेव, राम, नारायण, हरि, दामोदर, श्रीधर, वेदाङ्ग, गरुड़ध्वज, अनन्त तथा कृष्णगोपाल ये मेरे अट्ठाईस दिव्य नाम हैं: जिनके जप करने से पापों का नाश होता है, करोड़ों गौदान, सैकड़ों अश्वमेध यज्ञ करने तथा हजारों कन्यादान करने का फल मनुष्य को प्राप्त होता है. अमावस्या को, पूर्णिमा को, एकादशी को, तथा नित्य सन्ध्या काल में, प्रातःकाल में तथा दोपहर में उपर्युक्त दिव्य नामों का जप करने से समस्त पापों से मुक्ति मिलती है.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तये

सहस्त्रपादाक्षि शिरोरूवाहवे ।

सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते

सहस्त्र कोटि युगधारिणे नमः ।।

अनन्त स्वरूप आपकी विग्रह हैं, सहस्रपद, नेत्र, सिर, एवं आजानु-वाहु हैं. सहस्र नाम वाले नित्य पुरुष आप अनन्त कोटि युगों में विद्यमान हैं. आपको नमस्कार है.

[विष्णुसहस्रनाम से]

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ।

प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः ।।

श्रीकृष्ण, वासुदेव, हरि आदि नामों से विदित परमात्मस्वरूप आप अपने प्रणतजनों के दुःखों का नाश करते हैं. हे गोविन्द, आपको बारम्बार नमस्कार है.

[भागवत- 1.8.21]

श्रीगौर-गीति

सखे, कलय गौर मुदारम् ।

निन्दित - हाटक - कान्ति - कलेवर - गर्वित भारकभारम् ।। 1 ।।

हे सखे ! परम औदार्यमयी लीला का प्रकाश करने वाले, अपनी अंग कान्ति से तपाये हुए

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्ध स्वर्ण की भाँति कान्ति का तिरस्कार करने वाले और करोड़ों कामदेव के सौन्दर्य को भी मात करने वाले श्री शचीनन्दन गौर हरि के मधुर नाम, रूप, गुण और लीलाओं का तुम गान करो.

मधुकर रञ्जित - मालति -मण्डित - जितघन - कुञ्चित केशम् ।

तिलक विनन्दित - शशधर - रूपक - भुवन - मनोहर - वेशम् ।। 2 ।।

जो भौंरों के मधुर गुञ्जार से अनुरंजित सुन्दर सुगन्धित मालती पुष्पों की माला से सुशोभित हैं,जिनके काले-काले घुँघराले केश काले मेघों की शोभा को भी तुच्छ बना देते हैं, जिनका तिलकयुक्त मुखारविन्द चन्द्रमा के रूप को हेय वनाता है तथा ज़िनका सुन्दर वेश त्रिभुवन के मन को भी हरण करने वाला है, हे सखे, तुम उन श्री शचीनन्दन गौर हरि के मधुर नाम, गुण रूप और लीलाओं का गा़न करो.

मधु मधुरास्मित - लोभित - तनुभृतअनुपम् - भाव - विलासम् ।

निधुवन नागरी मोहित - मानस - विकथित - गद्‌गद भाषम् ।। 3 ।।

जो मन्द मधुर मुस्कान से तथा अनुपम भाव रूप विलास के द्वारा समस्त प्राणियों को लुभा रहे हैं,जिनका अन्तःकरण श्रीमती राधिका के उन्नतोज्ज्वल प्रेम में मोहित है, जो उक्त दशा में प्रेममय गद्‌गद वाणी से श्रीकृष्ण के गुणानुवाद कर रहे हैं, हे सखे ! तुम उन श्री शचीनन्दन गौर हरि के मधुर नाम, रूप, गुण और लीलाओं का प्रीतिपूर्वक गान करो.

परमाकिञ्चन-किञ्चन - नरगण - करुणा - वितरण शीलम् ।

क्षोभित दुर्मति - 'राधामोहन' - नामक - निरुपम लीलम् ।। 4 ।।

परम सौभाग्यवान निष्किञ्चन जनों को नाम प्रेम दान रूपी कृपा का वितरण करने वाले, महावदान्य श्री गौर सुन्दर की निरुपम लीलाओं का आस्वादन करने के लोभ से अत्यन्त दुर्बुद्धि 'राधामोहन' नामक यह दास अत्यन्त व्याकुल होकर गान करता है.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीकृष्ण-गीति

देव ! भवन्तं वन्दे ।

मन्मानसं-मधुकरमर्पय, निज-पद-पङ्कज-मकरन्दे ।। 1 ।।

हे भगवान श्रीकृष्ण ! मैं आपकी वन्दना करता हूँ. कृपया मेरे मन रूपी भ्रमर को अपने चरण कमलों के मकरन्द का रस चखा दीजिये, जिससे वह अन्यत्र आसक्त न हो सके.

यदपि समाधिषु विधिरपि पश्यति, न तव नखाग्रमरीचिम् ।

इदमिच्छामि निशम्य लवाच्युत ! तदपि कृपाद्भुतवीचिम् ।। 2 ।।

यद्यपि ब्रह्मा भी अनन्त समाधियों में तुम्हारे चरणनखों के अग्रभाग की एक किरण को भी नहीं देख पाते हैं, तो भी हे अच्युत, तुम्हारी कृपा की आश्चर्यमयी तरग को सुनकर कि आपकी प्राप्ति केवल आपकी कृपा से ही साध्य है, मैं ऐसा चाहता हूँ.

भक्तिरुदञ्चति यद्यपि माधव ! न त्वयि मम तिलमात्री ।

परमेश्वरता तदपि तवाधिके, दुर्घट घटन - विधात्री ।। 3 ।।

हे माधव ! यद्यपि तुम्हारे श्रीचरणों के प्रति मेरी तिलमात्र भी भक्ति नहीं है, फिर भी असम्भव को भी सम्भव बनाने वाली अपनी परमेश्वरता के द्वारा मेरा मनोरथ पूरा कर दीजिये.

अयमविलोलतयाद्य सनातन, कलिताद्भुत-रस भारम् ।

निवसतु नित्यमिहामृत निन्दनि, विन्दन् मधुरिमसारम् ।। 4 ।।

हे सनातन ! तुम्हारे चरणारविन्द, अमृत को भी तुच्छ बनाते हैं, अतः मेरा मनरूप-मधुकर तृष्णारहित होकर, निश्चलतापूर्वक, तुम्हारे चरणारविन्दों में ही नित्य निवास करता रहे, यही मेरी प्रार्थना है.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीनाम-ध्वनियाँ

1. जय शचीनन्दन जयगौरहरि, विष्णुप्रिया प्राणधन नदिया बिहारी ।
2. जय शचीनन्दन गौरगुणाकर । प्रेम परसमणि भावरससागर ।
3. जय श्रीराधे जय नन्दनन्दन, जय जय गोपीजन मनरञ्जन ।
4. श्यामसुन्दर कन्हैयालाल, गिरवरधारी नन्ददुलाल ।
5. श्रीराधारमण कुञ्जबिहारी, मुरलीधर गोवर्धनधारी ।
6. राधे राधे राधे, जय जय जय श्रीराधे ।
7. राधे राधे गोविन्द, गोविन्द राधे ।
8. मोर मुकुट पीताम्बर धारी, मुरलीधर गोवर्धन धारी ।
9. बोल हरि, बोल हरि, हरि हरि बोल, केशव माधव गोविन्द बोल ।
10. जय श्रीश्यामा, जय श्रीश्याम, जय जय श्रीवृन्दावन धाम ।

(जय जय) राधे कृष्ण गोविन्द ।
राधे गोविन्द, राधे गोविन्द ॥
(जय जय) श्यामसुन्दर, मदनमोहन, श्रीवृन्दावनचन्द्र,
(जय जय) राधारमण रासबिहारी, श्रीगोकुलानन्द ॥
(जय जय) राधाकांत राधाविनोद, श्रीराधागोविन्द,
(जय जय) रासेश्वरी विनोदिनी भानुकुलचन्द्र
जय जय राधे कृष्ण गोविन्द . . .
(जय जय) ललिता विशाखा आदि जत सखीवृन्द,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(जय जय) रूपमञ्जरी आदि मञ्जरी अनङ्ग,
(जय जय) पौर्णमासी कुंदलता आरु वीरावृन्द ।।
(जय जय) सब मिलि करो कृपा आमि अतिमंद,
(जय जय) कृपा करि देहो युगल चरणारविन्द
जय जय राधे कृष्ण गोविन्द . . .

+++++

पाठ कीर्त्तन

(जय जय) नित्यानन्द अद्वैत गौराङ्ग ।
निताइ गौराङ्ग, निताइ गौराङ्ग ।।
जय जय नित्यानंद अद्वैत गौराङ्ग ।।
(जय) यशोदानन्दन शचीसुत गौरचन्द्र ।
(जय) रोहिणीनन्दन बलराम नित्यानन्द ।।
(जय) महाविष्णु अवतार श्रीअद्वैतचन्द्र ।
(जय) गदाधर श्रीवासादि गौरभक्तवृन्द ।।
(जय) स्वरूप रूप सनातन राय रामानन्द ।
(जय) खण्डवासी नरहरि मुरारि मुकुन्द ।।
(जय) पंचपुत्र संगे नाचे राय भवानन्द ।
(जय) तीन पुत्र संगे नाचे सेन शिवानन्द ।।
(जय) द्वादश गोपाल आदि चौसट्टि महन्त ।
उड़ीया गौड़ीय आदि जत भक्तवृन्द ।।
(जय) कृपा करि देहो गौर चरणारविन्द ।
जय जय नित्यानन्द अद्वैत गौराङ्ग ।।

+++++

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीराधाकृपाकटाक्ष स्तवराज

मुनीन्द्र-वृन्द-वन्दिते त्रिलोक-शोक-हारिणि
प्रसन्न-वक्त्र-पङ्कजे निकुञ्ज-भू-विलासिनि ।
व्रजेन्द्र-भानु-नन्दिनी व्रजेन्द्र-सूनु-संगते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ।। 1 ।।

मुनीन्द्रवृन्द द्वारा वंदित, तीनों लोकों के शोक का हरण करने वाली, प्रसन्न मुखारविंद युक्त, निकुञ्ज विलासिनी, वृषभानु सुता, ब्रजेन्द्रनन्दन की प्रिया श्रीराधे ! आप मुझ पर कब कृपा दृष्टि करेंगी ।। 1 ।।

अशोक-वृक्ष-वल्लरी-वितान-मण्डप-स्थिते
प्रवाल-बालपल्लव-प्रभारुणाङ्घ्रि-कोमले ।
वराभय-स्फुरत्-करे प्रभूत-सम्पदालये
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ।। 2 ।।

अशोक वृक्ष वल्लरियों से निर्मित विशाल मण्डप में विराजमान, मूँगा एवं नव विकसित पल्लव के समान अरुण कांतिमय चरण कमलों वाली, भक्तों के अभयदान हेतु विकसित कर कमलों वाली, प्रचुर ऐश्वर्य की निधान श्रीराधे ! कब मुझे अपने कृपावलोकन का पात्र बनायेंगी ।। 2 ।।

अनङ्ग-रङ्ग-मङ्गल-प्रसङ्ग-भङ्गगुरभ्रुवोः
सविभ्रमं ससम्भ्रमं दृगन्त-बाण-पातनैः ।
निरन्तरं वशीकृतं-प्रतीत-नन्दनन्दने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ।। 3 ।।

प्रेमरंग के मांगलिक प्रसंग में टेढ़ी भृकुटि करके सुन्दर विभ्रममय मान उत्पन्न करते हुए अपनी कटाक्षवाण वर्षा से श्रीनन्दनन्दन को वश में करने वाली श्रीराधे ! मुझे कृपा कटाक्ष का भाजन कब बनायेंगी ? ।। 3 ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तड़ित्-सुवर्ण-चम्पक-प्रदीप्त-गौर-विग्रहे

मुख-प्रभा-परास्त-कोटि-शारदेन्दुमण्डले ।

विचित्र-चित्र-संचरच्चकोर-शाव-लोचने

कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ।। 4 ।।

विद्युत्, सुवर्ण एवं चम्पा पुष्पों के सदृश उज्ज्वल गौर देहवाली अपनी वदन कान्ति से अगणित शरदेन्दुओं को परास्त करने वाली, विचित्र एवं अद्भुत गतियुक्त श्रीराधे ! आप मुझ पर कब कृपादृष्टि करेंगी ? ।। 4 ।।

मदोन्मदातियौवने प्रमोद-मान-मण्डिते

प्रियानुराग-रञ्जिते कला विलास पण्डिते ।

अनन्य-धन्य-कुञ्ज-राज्य-काम-केलि-कोविदे

कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ।। 5 ।।

यौवन के मद में उन्मत्त, प्रमोदयुक्त मान से अभिमंडित प्रिय के अनुराग में अनुरक्त, क्रीड़ा विलास में निपुण अपने अनन्य उपासकों को धन्य करने वाली, निकुंजधाम कामकेलि में पारंगत श्री राधे! कब मुझे अपनी कृपा कटाक्ष का भाजन वनायेंगी ? ।। 5 ।।

अशेष-हाव-भाव-धीर-हीर-हार-भूषिते

प्रभूतशातकुम्भकुम्भ-कुम्भि-कुम्भ-सुस्तनि ।

प्रशस्त-मन्द-हास्य-चूर्ण-पूर्ण-सौख्य-सागरे

कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ।। 6 ।।

अनन्त हाव भाव सम्पन्न होने पर भी अति गम्भीर, हीरक हार आदि दिव्याभूषणों से विभूषित, स्वर्णकलश एवं हस्तिकुम्भ के समान सुन्दर स्तनों वाली, मन्द हास की तरंगों से परिपूर्ण सुख की सिंधु श्रीराधे ! अपने कृपा कटाक्ष का पात्र मुझे कब बनायेंगी ।। 6 ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मृणाल-बाल-वल्लरी-तरङ्ग-रङ्ग-दोर्लते

लताग्र-लास्य-लोल-नील-लोचनावलोकने ।

ललल्लुलन्मिलन्मनोज्ञ-मुग्ध-मोहनाश्रये

कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ।। 7 ।।

जलतरंगों से कम्पित कोमल कमल नाल के समान जिनकी भुजाएं हैं, मन्द समीर से आन्दोलित लता के अग्रभाग के सदृश चंचल नेत्रों से जो अवलोकन करती हैं आपके लावण्य पें खोये हुए, मिलन लोलुप मनमोहन की आश्रय स्वरूपा श्रीराधे ! अपने कृपा कटाक्ष का अधिकारी मुझे कब बनायेंगी ।। 7 ।।

सुवर्ण-मालिकाञ्चित-त्रिरेख-कम्बु-कण्ठग-

त्रिसूत्र-मङ्गलीगुण-त्रिरत्न-दीप्त-दीधिते ।

सलोल-नीलकुन्तल-प्रसून-गुच्छ-गुम्फिते

कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ।। 8 ।।

आपके शंख सदृश त्रिवलियुक्त कंठ में सुवर्ण मालाओं के अलंकार, मंगलसूत्र और प्रभायुक्त विविध रत्नों के आभूषण सुशोभित हैं. सुन्दर पुष्प गुच्छों से गुँथे हुए चंचल काले केशों वाली श्रीराधे ! आप कब मुझे कृपावलोकन से कृतार्थ करेंगी ।। 8 ।।

नितम्ब-बिम्ब-लम्बमान-पुष्प-मेखला-गुणे

प्रशस्त-रत्न-किङ्किणी-कलाप-मध्य-मञ्जुले ।

करीन्द्र-शुण्ड-दण्डिकावरोह-सौभगेरुके

कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ।। 9 ।।

नितम्बचुम्बिनी पुष्पों से गुंथी हुई लम्बी चोटी, तथा कटिप्रान्त में मणिमय पुष्पवृन्द की सुमधुर झंकार से युक्त करधनी से सुशोभित, हाथी की सूँड के समान जंघाओं वाली श्रीराधे ! आप कब मुझे अपने कृपा कटाक्ष का पात्र बनायेंगी ।। 9 ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनेक-मन्द्रनाद-मञ्जु-नूपुरारवस्खलत्-

समाज-राजहंस-वंश-निक्वणातिगौरवे ।

विलोलहेमवल्लरी-विडम्बि-चारु-चङ्क्रमे

कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ।। 10 ।।

जिनके चरण कमलों में सुशोभित स्वर्णमय नूपुरों से वेदमन्त्रों के सदृश सुन्दर ध्वनि उत्पन्न होती है, एवं जो कूँजते हुए राजहंसों की पंक्ति सदृश प्रतीत होते हैं. चलते समय आपके अंग स्वर्णबेल की तरह लहराते हैं. हे श्रीराधे ! आप कब मुझे कृपावलोकन से कृतार्थ करेंगी ।। 10 ।।

अनन्त-कोटि-विष्णुलोक-नम्न-पद्मजार्चिते

हिमाद्रिजा-पुलोमजा-विरञ्चिजा-वरप्रदे ।

अपार-सिद्धि-वृद्धि-दिग्ध-सत्पदाङ्गुली-नखे

कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ।। 11 ।।

अनन्त कोटि विष्णुलोकों की अधिष्ठात्री श्रीलक्ष्मी द्वारा भी जो पूजित हैं, पार्वती, शची एवं सरस्वतीजी को भी जो वर प्रदान करती हैं, आपके पादपद्मों के एक नखमात्र का ध्यान भी अपार सिद्धियों को बढ़ाता है, दयामयी जगज्जननी श्रीराधे ! आप मुझको भी कभी कृपा कटाक्ष द्वारा कृतार्थ करेंगी ।। 11 ।।

मुखेश्वरि क्रियेश्वरि स्वधेश्वरि सुरेश्वरि

त्रिवेद-भारतीश्वरि प्रमाण-शासनेश्वरि ।

रमेश्वरि क्षमेश्वरि प्रमोद-काननेश्वरि

व्रजेश्वरि व्रजाधिपे श्रीराधिके नमोऽस्तुते ।। 12 ।।

आप सम्पूर्ण यज्ञों तथा शुभ कर्मों की अधीश्वरी हैं, पूर्वजों एवं देवगणों की भी स्वामिनी हैं, तीनों वेदों के मन्त्रों एवं समस्त शास्त्रों की प्रमाण स्वरूपा हैं, लक्ष्मी एवं दुर्गा शक्तियों तथा आनन्द लोक की अधिष्ठात्री हैं, श्रीव्रजेश्वरी व्रज की महारानी श्रीराधे ! आपको नमस्कार है।। 12 ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इतीममद्भुतं स्तवं निशम्य भानुनन्दनी
करोतु संततं जनं कृपाकटाक्षभाजनम् ।
भवेत्तदैव संचित-त्रिरूप-कर्म-नाशनं
भवेत्तदा व्रजेन्द्र-सूनु-मण्डल-प्रवेशनम् ॥ 13 ॥

श्रीवृषभानुनन्दिनी श्रीराधिके ! मेरी इस अद्भुत स्तुति को श्रवण कर सदा के लिए इस दीन को कृपावलोकन का पात्र बना लीजिये, उक्त अभिलाषा की पूर्ति होते ही (प्रारब्ध, सञ्चित एवं क्रियमाण) मेरे तीनों तरह के कर्म विनष्ट हो जायेंगे और तत्क्षण श्रीव्रजेन्द्रनन्दन के मण्डल (नित्य तथा दिव्य लीला) में मेरा प्रवेश हो जायेगा ॥ 13 ॥

राकायां च सिताष्टम्यां दशम्यां च विशुद्धधीः ।
एकादश्यां त्रयोदश्यां यः पठेत् साधकः सुधीः ॥ 14 ॥

पूर्णिमा, शुक्ल-पक्ष की अष्टमी, दशमी और एकादशी के दिन शुद्ध-बुद्धि होकर उक्त श्रीकृपाकटाक्ष-स्तोत्र का पाठ करने से साधक प्रज्ञा को प्राप्त करता है. ॥ 14 ॥

यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति साधकः ।
राधाकृपाकटाक्षेण भक्तिः स्यात् प्रेमलक्षणा ॥ 15 ॥

उस साधक को जिस-जिस कामना की भावना होगी, वही प्राप्त करेगा. निष्काम पाठ से श्रीराधाजी के कृपाकटाक्ष द्वारा प्रेमाभक्ति प्राप्त होगी. ॥ 15 ॥

ऊरुदघ्ने नाभिदघ्ने हृद्दघ्ने कण्ठदघ्नके ।
राधाकुण्डजले स्थित्वा यः पठेत् साधकः शतम् ॥ 16 ॥

पाठ-विधि :- जङ्घा, नाभि, छाती तथा कण्ठ पर्यन्त राधाकुण्ड के जल में खड़े होकर इस स्तोत्र का सौ बार पाठ करे. ॥ 16 ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद् वाक्सामर्थ्य ततो लभेत् ।

ऐश्वर्यं च लभेत्साक्षाद् दृशा पश्यति राधिकाम् ।। 17 ।।

उसे सर्व-सिद्धि मिलेगी तथा मनवाञ्छित फल, समस्त ऐश्वर्य, एवं उसे साक्षात् श्रीराधिकाजी का दर्शन होगा. ।। 17 ।।

तेन सा तत्क्षणादेव तुष्टा दत्ते महावरम् ।

येन पश्यति नेत्राभ्यां तत्प्रियं श्यामसुन्दरम् ।। 18 ।।

और उसे महावरदान देकर सन्तुष्ट करेंगी. इस प्रकार वह श्रीराधिकाजी की सर्वोपरि प्रिय-वस्तु श्रीश्यामसुन्दर का अपने नेत्रों से साक्षात् दर्शन करेगा. ।।18।।

नित्यलीलाप्रवेशं च ददाति हि व्रजाधिपः ।

अतः परतरं प्राप्यं वैष्णवानां न विद्यते ।। 19 ।।

ऐसे भक्त को श्रीकृष्ण नित्यलीला-प्रवेश का दान देते हैं. इससे बढ़कर प्राप्त करने योग्य वस्तु वैष्णवों के लिए और कुछ भी नहीं है. ।।19।।

श्री

कृष्णवर्ण त्विषाकृष्णं साङ्गोपाङ्गास्त्रपार्षदम् ।

यज्ञैः सङ्कीर्त्तनप्रायैर्यजन्ति हि सुमधेसः ।। 32।।

जिनके नाम में 'कृष्ण' दो वर्ण आते हैं, एवं अंग श्रीनित्यानन्द, उपपांग श्रीवास पण्डित आदि, अस्त्र अविद्यानाशक श्रीहरिनाम तथा पार्षद श्रीगदाधर आदि के सहित जो सर्वदा विराजित हैं, ऐसे गौर कान्ति वाले स्वयं भगवान श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु की कलियुग में बुद्धिमान जन संकीर्त्तन रूपी यज्ञ के द्वारा आराधना करते हैं.।। 32 ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं

तीर्थास्पदं शिवविरिञ्चिनुतं शरण्यम् ।

भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं

वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ।। 33।।

हे महाप्रभो ! आप शरणागत रक्षक हैं, आपके चरणारविन्द सदा सर्वदा ध्यान करने योग्य, माया मोह के कारण होने वाली सांसारिक विपदाओं का अन्त कर देने वाले तथा भक्तों की अभीष्ट समस्त वस्तुओं को प्रदान करने वाले कामधेनु स्वरूप हैं. वे तीर्थों को भी तीर्थ बनाने वाले स्वयं परमतीर्थ स्वरूप हैं; शिव, ब्रह्मा आदि बड़े-बड़े देवता उनका नमन करते हैं, और जो कोई भी उन चरणों की शरण में आ जाय, उसे स्वीकार कर लेते हैं. सेवकों की समस्त विपदा और कष्ट के नाशक तथा संसार सागर से पार कराने वाले जहाज स्वरूप हैं. हे महापुरुष ! मैं आपके उन्हीं चरणारविन्दों की वन्दना करता हूँ.।।33।।

त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सितराज्यलक्ष्मीं

धर्मिष्ठ आर्यवचसा यदगादरण्यम् ।

मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावद्

वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ।। 34 ।।

भगवन् ! आपके चरण कमलों की महिमा कौन कह सकता है ? पिता के वचनों की रक्षार्थ देव वाञ्छित और दुस्त्यज्य राज्यलक्ष्मी को छोड़कर आपके चरण वन-वन घूमते फिरे. आपकी धर्मनिष्ठा का बखान नहीं हो सकता. और महापुरुष, प्रेयसी सीताजी के चाहने पर जानबूझ कर आपके चरणकमल मायामृग के पीछे दौड़ते रहे. सचमुच आप प्रेम की सीमा हैं. महाप्रभो ! मैं आपके उन्हीं चरणारविन्दों की वन्दना करता हूँ.।।34।।

[भाग. 11. 5]

+++++

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीजगन्नाथाष्टकम्

कदाचित् कालिन्दीतट-विपिन-सङ्गीतकरवो,
मुदाभीरीनारी-वदनकमलास्वाद-मधुपः ।
रमा-शम्भु-ब्रह्मामरपति-गणेशार्चितपदो,
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।। 1 ।।

कभी पहले यमुना तीरस्थ श्रीवृन्दावन में वेणुवादन में रत, गोपवनिताओं के मुखारविन्दों का आनन्दपूर्वक आस्वादन करने वाले भ्रमर, एवं लक्ष्मी, शिव, ब्रह्मा, इन्द्र एवं गणेश आदि द्वारा पूजित श्रीचरणों वाले, हे श्री जगन्नाथ स्वामी ! मुझे दर्शन दीजिये ।। 1 ।।

भुजे सव्ये वेणुं शिरसि शिखिपिच्छं कटितटे,
दुकूलं नेत्रान्ते सहचरि-कटाक्षं विदधते ।
सदा श्रीमद्वृन्दावन-वसति-लीलापरिचयो,
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।। 2 ।।

वाम भुजा में वेणु, सिर पर मोरपंख, कमर में पीताम्बर, अपने विशाल नेत्रों में सखियों के कटाक्षों को धारण करने वाले तथा सर्वदा वृन्दावन धाम की लीलाओं में मग्न, हे जगन्नाथ स्वामी ! मेरे नयनों के सम्मुख आइये ।। 2 ।।

महाम्भोधेस्तीरे कनकरुचिरे नीलशिखरे,
वसन् प्रासादान्तः सहज-बलभद्रेण बलिना ।
सुभद्राः मध्यस्थः सकल-सुर-सेवावसरदो,
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।। 3 ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महासागर के किनारे सुन्दर नीलाचल पर्वत के शिखर पर स्वर्ण मंदिर में परम बलशाली बड़े भाई बलरामजी के साथ मध्य में सुभद्रा को लेकर विराजमान आप समस्त देवताओं को अपनी सेवा का अवसर प्रदान करते हुए हे जगन्नाथ स्वामी ! मेरे नयनपथ में आइये ।। 3 ।।

कृपा-पारावारः सजल-जलद-श्रेणि-रुचिरो,
रमावाणीरामः स्फुरदमल-पङ्केरुहमुखः ।
सुरेन्द्रैराराध्यः श्रुतिगणशिखा-गीतचरितो,
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।। 4 ।।

करुणावरुणालय, तरल रुचिर घनश्याम, प्रसन्न मुखारविन्द, लक्ष्मी एवं सरस्वती के साथ विहार करने वाले जगन्नाथ प्रभु आप देवताओं के आराध्य तथा श्रुतियों के द्वारा वन्दित होते हुए हमें दर्शन दीजिये ।। 4 ।।

रथारूढ़ो गच्छन् पथि मिलित-भूदेव-पटलैः,
स्तुति-प्रादुर्भावं प्रतिपदमुपाकर्ण्य सदयः ।
दयासिन्धुर्बन्धुः सकलजगतां सिन्धुसुतया,
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।। 5 ।।

रथयात्रा के समय मार्ग में ब्राह्मणों द्वारा अपनी महिमा का गान सुनकर आप भक्तों पर सदय हो जाते हैं. सकल जगत के बन्धु दयासिन्धु जगन्नाथ स्वामी ! सिन्धुसुता लक्ष्मीजी के सहित हमें दर्शन दीजिये ।। 5 ।।

परंब्रह्मापीड़ः कुवलय - दलोत्फुल्ल-नयनो,
निवासी नीलाद्रौ निहित-चरणोऽनन्त-शिरसि ।
रसानन्दी राधा-सरस-वपुरालिङ्गन-सुखो,
जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।।6।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रफुल्लित कमल दल लोचन नीलाचल निवासी परात्पर परब्रह्म के चरणों को भगवान शेष अपने मस्तक पर धारण करते हैं. राधा रस से आनन्दित तथा राधा के सरस अंग संग में सुखी होने वाले जगन्नाथ स्वामी ! कृपया हमें दर्शन प्रदान कीजिये ।। 6 ।।

न वै याचे राज्यं न च कनक-माणिक्य-विभवं,

न याचेऽहं रम्यां सकल-जन-काम्यां वरवधूम् ।

सदा काले काले प्रमथपतिना गीतचरितो,

जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।। 7 ।।

हे स्वामी ! मैं आपसे राज्य, मणि और सुवर्ण का वैभव तथा सबके द्वारा चाही गयी सुन्दर रमणियों की याचना नहीं करता. कामदेव को जीतने वाले भगवान शिव के द्वारा वन्दित हे जगन्नाथ ! सदा सर्वदा आप हमें दर्शन देते रहें, यही कामना है ।। 7 ।।

संसारं द्रुततरमसारं सुरपते,

हर त्वं पापानां विततिमपरां यादवपते !

अहो दीनानाथे निहित-चरणो निश्चितमिदं,

जगन्नाथः स्वामी नयनपथगामी भवतु मे ।। 8 ।।

असार संसार को हरने वाले देवाधिदेव अनन्त पापों को मिटाने वाले यादवपति तथा सदैव दीन और अनाथों पर कृपा करने वाले जगन्नाथ स्वामी ! कृपया मुझे दर्शन दीजिये ।। 8 ।।

जगन्नाथाष्टकं पुण्यं यः पठेत् प्रयतः शुचिः ।

सर्वपाप-विशुद्धात्मा विष्णुलोकं स गच्छति ।। 9 ।।

शुद्ध हृदय एवं निष्ठा से पुण्य स्वरूप जगन्नाथ अष्टक का पाठ करने से समस्त पापों से आत्मा शुद्ध होकर भगवद्धाम को प्राप्त करती है ।। 9 ।।

+++++

आम्नाय-ग्रन्थालय, भदैनि, करौंदी वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीशिक्षाष्टकम्

चेतोदर्पणमार्जनं भवमहादावाग्निनिर्वापणं
श्रेयः कैरवचन्द्रिकावितरणं विद्यावधूजीवनम् ।
आनन्दाम्बुधिवर्धनं प्रतिपदं पूर्णामृतास्वादनं
सर्वात्मस्नपनं परं विजयते श्रीकृष्णसंकीर्तनम् ।। 1 ।।

श्रीकृष्ण नाम संकीर्त्तन चित्त रूपी दर्पण का मार्जन कर स्वच्छ करता है. संसार के ताप रूपी महादावानलको शमित कर कल्याणमयी कुमुद ज्योत्सना का वितरण करता है, विद्यारूपी वधू का प्राण एवं आनन्दसागर का वर्द्धन करने वाला है. उसके प्रत्येक क्षण में पूर्णामृत का आस्वादन होता है. वह सम्पूर्ण आत्मा की तृप्ति करता है. देह एवं इन्द्रियों के रन्ध्रों में प्रत्येक अणु परमाणु में प्रविष्ट होकर उसे अनिर्वचनीय रस से अभिषिक्त करता है, अतः नाम संकीर्त्तन की जय हो ।। 1 ।।

नाम्नामकारि बहुधा निजसर्वशक्ति-
स्तत्रार्पिता नियमितः स्मरणे न कालः ।
एतादृशी तव कृपा भगवन् ममापि,
दुर्दैवमीदृशमिहाऽजनि नानुरागः ।। 2 ।।

अपने अनन्त नामों में अपनी सम्पूर्ण शक्ति अर्पित कर आपने नाम स्मरण को देशकाल आदि के बन्धनोंसे मुक्त रखा हैं. हे भगवन् ! आपकी ऐसी कृपा है तथापि मुझ भाग्यहीन की नाम-स्मरण में प्रीति नहीं है ।। 2 ।।

तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना ।
अमानिना मानदेन कीर्त्तनीयः सदा हरिः ।। 3 ।।

अपने को तृण से भी तुच्छ समझकर, वृक्ष से भी सहनशील बनकर, स्वयं अभिमान से शून्य होकर, दूसरों को सम्मान देकर सदैव श्रीहरिसंकीर्त्तन करना चाहिए ।। 3 ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न धनं न जनं न सुन्दरीं कवितां वा जगदीश कामये ।

मम जन्मनि जन्मनीश्वरे भवताद् भक्तिरहैतुकी त्वयि ।। 4 ।।

हे जगदीश ! मैं, न धन चाहता हूँ, न जन चाहता हूँ, न सुन्दर कामिनी ही चाहता हूँ. केवल आपके श्रीचरणकमलों में मेरी जन्म-जन्म अहैतुकी भक्ति हो, यही चाहना है ।। 4 ।।

अयि नन्दतनुज किङ्करं पतितं मां विषमे भवाम्बुधौ ।

कृपया तव पादपङ्कजस्थित-धूलीसदृशं विचिन्तय ।। 5 ।।

हे नन्दनन्दन ! वस्तुतः मैं आपका नित्यकिंकर हूँ, किन्तु अब निज कर्मदोष से विषय संसारसागर में पड़ा हूँ. आप शरणागतवत्सल हैं; मुझ अनाश्रित को अपने चरणकमलों में संलग्न रजकण के समान जानें. आपकी करुणा के बिना, मुझ साधनशून्य का संसार से निस्तार का कोई उपाय नही है ।।5।।

नयनं गलदश्रुधारया वदनं गद्गद्रुद्धया गिरा ।

पुलकैर्निचितं वपुः कदा तव नामग्रहणे भविष्यति ।। 6 ।।

हे प्रभो ! आपका नाम ग्रहण करते समय, मेरे नयन अश्रुधारा से, मेरा मुख गद्गद वाणी से और शरीरपुलकावलियों से कब व्याप्त होगा ? ।। 6 ।।

युगायितं निमेषेण चक्षुषा प्रावृषायितम् ।

शून्यायितं जगत् सर्वं गोविन्दविरहेण मे ।। 7 ।।

हे सखि ! गोविन्द के विरह से, मेरा निमेषमात्र काल भी युग के समान प्रतीत होता है, आँखों ने वर्षा ऋतु का सा रूप धारण कर लिया है, और यह समस्त जगत् मुझे शून्य सा प्रतीत होता है ।। 7।।

आश्लिष्य वा पादरतां पिनष्टु मामदर्शनान्मर्महतां करोतु वा ।

यथा तथा वा विदधातु लम्पटो मत्प्राणनाथस्तु स एव नापरः ।। 8 ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वह लम्पट अपनी चरण सेविका दासी को प्रगाढ़ आलिंगन से भींचे, अथवा अपने दर्शन न देकर, मुझे मर्माहत करते हुए पीड़ा पहुँचाये, या जो चाहे सो करे, परन्तु वही मेरा प्राणनाथ है. उनके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है ।। 8 ।।

[कलियुग पावनावतार श्रीकृष्ण चैतन्यदेव उपदिष्ट]

श्रीमङ्गलाचरणानि

आजानुलम्बितभुजौ कनकावदातौ
संकीर्तनैकपितरौ कमलायताक्षौ ।
विश्वम्भरौ द्विजवरौ युगधर्मपालौ
वन्दे जगत्प्रियकरौ करुणावतारौ ।। 1 ।।

अन्तःकृष्णं बहिर्गौरं दर्शिताङ्गादिवैभवम् ।
कलौ संकीर्तनाद्यैः स्मः कृष्णचैतन्यमाश्रिताः ।। 2 ।।

आराध्यो भगवान् व्रजेशतनयस्तद्धाम वृन्दावनं
रम्या काचिदुपासना व्रजवधूवर्गेण या कल्पिता ।
श्रीमद्भागवतं प्रमाणममलं प्रेमा पुमर्थो महान्
श्रीचैतन्यमहाप्रभोर्मतमिदं तत्रादरो नः परः ।। 3 ।।

माधुर्यैर्मधुभिः सुगन्धि भजनस्वर्णाम्बुजानां वनं
कारुण्यामृतनिर्झरैरुपचितः सत्प्रेमहेमाचलः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भक्तांभोधेरधोरणी विजयिनी निष्कम्पशम्पावलि-
र्देवो नः कुलदैवतं विजयतां चैतन्यकृष्णो हरिः ।। 4 ।।

वन्दे गुरूनीशभक्तानीशमीशावतारकान् ।
तत्प्रकाशांश्च तत्छक्तीः कृष्णचैतन्यसंज्ञकम् ।। 5 ।।

यदद्वैतं ब्रह्मोपनिषदि तदप्यस्य तनुभा
य आत्मान्तर्यामी पुरुष इति सोऽस्यांशविभवः ।
षडैश्वर्यैः पूर्णो य इह भगवान् स स्वयमयं
न चैतन्यात् कृष्णाज्जगति परतत्त्वं परमिह ।। 6 ।।

अनर्पितचरीं चिरात् करुणयावतीर्णः कलौ
समर्पयितुमुन्नतोज्ज्वलरसां स्वभक्तिश्रियम् ।
हरिः पुरटसुन्दरद्युतिकदम्बसन्दीपितः
सदा हृदयकन्दरे स्फुरतु वः शचीनन्दनः ।। 7 ।।

राधाकृष्णप्रणयविकृतिर्ह्लादिनीशक्तिरस्मा-
देकात्मनावपि भुवि पुरा देहभेदं गतौ तौ ।
चैतन्याख्यं प्रकटमधुना तद्द्वयं चैक्यमाप्तं
राधाभावद्युतिसुवलितं नौमि कृष्णस्वरूपम् ।। 8 ।।

श्रीराधायाः प्रणयमहिमा कीदृशो वानयैवा-
स्वाद्यो येनाद्भुतमधुरिमा कीदृशो वा मदीयः ।
सौख्यं चास्या मदनुभवतः कीदृशं वेति लोभा-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्तद्भावाढ्यः समजनि शचीगर्भसिन्धौ हरीन्दुः ।। 9 ।।

\+ + + + +

श्रीचैतन्याष्टकम्

सदोपास्यः श्रीमान् धृत-मनुज-कार्यैः प्रणयितां,
वहद्भिर्गीर्वाणैर्गिरिश-परमेष्ठिप्रभृतिभिः ।
स्वभक्तेभ्यः शुद्धां निज-भजन-मुद्रामुपदिशन,
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ।। 1 ।।

मनुष्यदेहधारी प्रेममूर्त्ति शिव, ब्रह्मा आदि देवों द्वारा सदैव वन्दनीय एवं परम शोभायमान, और जो अपने भक्तों के लिए भजन की विशुद्ध मुद्रा का उपदेश देते हुए विराजमान हैं, वे श्रीचैतन्य महाप्रभु पुनः मुझे दर्शन देंगे क्या ? ।। 1 ।।

सुरेशानां दुर्गं गतिरतिशयेनोपनिषदां,
मुनीनां सर्वस्वं प्रणतपटलीनां मधुरिमा ।
विनिर्यासः प्रेम्णो निखिल पशुपालाम्बुज-दृशां,
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ।। 2 ।।

ब्रह्मा आदि देवताओं को भी अभय प्रदान करने वाले, उपनिषदों के लिए भी अगम्य, मुनियों के सर्वस्व, भक्तवृन्दों के लिए परम माधुर्यमय, गोपांगनाओं के कृष्ण विषयक प्रेम के सार स्वरूप श्रीकृष्ण चैतन्य फिर कब मेरे नेत्रों के समक्ष पदार्पण करेंगे ।। 2 ।।

स्वरूपं बिभ्राणो जगदतुलमद्वैत-दयितः,
प्रपन्न-श्रीवासो जनित परमानन्द-गरिमा ।
हरिर्दीनोद्धारी गजपति-कृपोत्सेक-तरलः,
स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ।। 3 ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस जगत में अनुपम एवं स्वरूप नामक प्रिय पार्षदों पर कृपा दृष्टि रखने वाले अद्वैताचार्य के परम प्रिय, श्रीवास पण्डित जिनके शरणागत हैं, एवं परमानन्द पुरी के प्रति जो गुरु भाव रखते हैं. दीनों के उद्धारक उनके दुखों को हरने वाले हरि जो गजपति नामक राजा पर कृपादृष्टि करने को उत्सुक हैं वे श्रीचैतन्य महाप्रभु पुनः मुझे दर्शन देंगे क्या ? ।। 3 ।।

रसोद्दामा कामार्बुद-मधुर-धामोज्ज्वल-तनु-

र्यतीनामुत्तंसस्तरणि-कर-विद्योति-वसनः ।

हिरण्यानां लक्ष्मीभरमभिभवन्नाङ्गिक-रुचा,

स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ।। 4 ।।

प्रेम रस में उन्मत्त, करोड़ों कामदेवों से भी सुन्दर, उज्ज्वल कान्तियुक्त मनोहर वपुधारी संयासीगणों में श्रेष्ठतम एवं जो प्रातःकालीन सूर्य के समान अरुण आभायुक्त अर्थात् गेरूआ वस्त्र धारण करते हैं वह श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु पुनः मुझे दर्शन देंगे क्या ? ।। 4 ।।

हरे कृष्णेत्युच्चैः स्फुरित-रसनो नामगणना-

कृतग्रन्थिश्रेणी-सुभग-कटिसूत्रोज्ज्वल-करः ।

विशालाक्षो दीर्घार्गल युगल-केलाञ्चित-भुजः,

स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ।। 5 ।।

जिनकी जिह्वा से हरेकृष्ण नाम निरन्तर उच्च स्वर में प्रस्फुटित हो रहा है एवं जिनका वाम हस्त उच्चरित किये गये नामों की गणना के लिए ली हुई ग्रंथ श्रेणी से एवं सुन्दर कटिसूत्र के द्वारा सुशोभित है, जिनके नेत्र कानों तक विस्तृत हैं. जिनकी सुन्दर भुजाएं घुटनों तक लम्बी हैं वे श्रीमहाप्रभु क्या फिर मुझे दर्शन देंगे ? ।। 5 ।।

पयोराशेस्तीर स्फुरदुपवनाली-कलनया,

मुहुर्वृन्दारण्य-स्मरण-जनित-प्रेम-विवशः ।

क्वचित् कृष्णावृत्ति-प्रचल-रसनो भक्ति-रसिकः,

स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ।। 6 ।।

अनन्त जल राशि अर्थात् सागर के तट पर विस्तृत रम्य उपवन श्रेणी को देखकर बारम्बार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृन्दावन के स्मृतिजन्य प्रेम के अधीन रहने वाले एवं भक्ति रस के रसिक होने के कारण जिनकी जिह्वा पर हरिनाम की आवृत्ति निरन्तर चल रही है वे श्रीचैतन्य महाप्रभु फिर कभी मुझे दर्शन देंगे क्या ? ।। 6 ।।

रथारूढ़स्यारादधिपदवि नीलाचल-पते-

रदभ्र-प्रेमोर्मि-स्फुरित-नटनोल्लास-विवशः ।

सहर्षं गायाद्भिः परिवृत-तनुर्वैष्णव-जनैः,

स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ।। 7 ।।

श्रीजगन्नाथ जी की रथयात्रा के समय रथ में विराजमान जगन्नाथ के सम्मुख भावविभोर होकर नृत्य करने वाले एवं सहर्ष उल्लासपूर्वक नाम सङ्कीर्त्तन करने वाले वैष्णवजनों से घिरे हुए श्रीचैतन्य महाप्रभु फिर कभी मुझे दृष्टि गोचर होंगे क्या ? ।। 7 ।।

भुवं सिञ्चन्नश्रु-स्रुतिभिरभितः सान्द्र-पुलकैः,

परीताङ्गो नीप स्तवक-नव-किञ्जल्क-जयिभः ।

घन-स्वेद-स्तोम-स्तमित-तनुरुत्कीर्तन-सुखी,

स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ।। 8 ।।

अपने प्रेमाश्रुओं से भूमि को सींचने वाले सर्वाङ्ग में व्याप्त प्रगाढ़ रोमांच से कदम्ब पुष्प वृन्द की केसर को जीतने वाले अत्यधिक स्वेद के कारण प्रायः भीगे हुए शरीर वाले एवं उत्कीर्त्तन अर्थात् भुजा उठाकर कीर्त्तन करने में सुख अनुभव करने वाले श्रीचैतन्य महाप्रभु क्या फिर मुझे दर्शन देंगे ? ।। 8 ।।

अधीते गौराङ्ग-स्मरण-पदवी-मङ्गलतरं,

कृती यो विश्रम्भ-स्फुरदमलधीरष्टकमिदम् ।

परानन्दे सद्यस्तदमल-पदाम्भोज-युगले,

परिस्फारा तस्य स्फुरतु नितरां प्रेमलहरी ।। 9 ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विश्वास सम्पन्न विशुद्ध बुद्धि वाला जो सौभाग्यवान व्यक्ति श्रीकृष्णचैतन्य देव के स्मरणमय मंगलमार्ग में परम मंगलदायक इस चैतन्याष्टक का पाठ करे उसके हृदय में श्रीचैतन्य महाप्रभु के परमानंदमय मंगलचरणारविंद की विस्तीर्ण प्रेम लहरी विशेष स्फूर्ति पाती रहे ।। 9 ।।

[श्रीरूपगोस्वामिना विरचितं श्रीचैतन्याष्टकं सम्पूर्णम्]

श्रीशचीतनयाष्टकम्

उज्ज्वल-वरण-गौरवर-देहं

विलसति-निरवधि-भावविदेहम् ।

त्रिभुवन-पावन-कृपया लेशं

तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ।। 1 ।।

स्वर्णकान्तियुक्त सुन्दर गौरदेहधारी सदैव देहातीत भाव जगत में विलास करने वाले श्रीशचीनन्दन की कृपा के लेशमात्र से त्रिभुवन पवित्र हो जाता है, उनको मैं प्रणाम करता हूँ ।। 1 ।।

गद्गद-अन्तर-भावविकारं

दुर्जन-तर्जन-नाद-विशालम् ।

भवभयभञ्जन-कारण-करुणं

तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ।। 2 ।।

अतिशय प्रेमभाव से गद्गद हृदय से उठी कीर्त्तन की उच्च ध्वनि से दुर्जन भयभीत हो जाते हैं तथा जिनकी करुणा से संसार का भय दूर हो जाता है उन श्रीशचीनन्दन को मैं प्रणाम करता हूँ ।। 2 ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अरुणाम्बरधर-चारुकपोलं

इन्दु-विनिन्दित-नखचय-रुचिरम् ।

जल्पित-निजगुणनाम-विनोदं

तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ।। 3 ।।

गेरुआ वस्त्रधारी, सुन्दर कपोलों वाले श्रीशचीनन्दन के नखों की मनोहर कांति चन्द्रमा को भी लज्जित करती है, तथा वे प्रभु के नाम और गुणों का आनंदपूर्वक कीर्त्तन करते हैं, उनको मैं प्रणाम करता हूँ ।। 3 ।।

विगलित-नयन-कमल-जलधारं

भूषण-नवरस-भावविकारम् ।

गति-अतिमन्थर-नृत्यविलासं

तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ।। 4 ।।

जिनके नयन कमलों से विरहाश्रुओं की धारा प्रवाहित है, जो भक्ति के समस्त भावों से भूषित हैं तथा जो अति मन्थर गति से नृत्य करते हैं उन श्रीशचीतनय को मैं प्रणाम करता हूँ ।। 4 ।।

चञ्चल-चारु-चरण-गति-रुचिरं

मञ्जीर-रञ्जित-पदयुग-मधुरम् ।

चन्द्र विनिन्दित-शीतलवदनं

तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ।। 5 ।।

कीर्त्तन में जिनके चरण चंचल गति से नृत्य करते हैं तथा उनके दोनों पैरों में मनोहारी नूपुर शोभायमान हैं, चन्द्रमा से भी अधिक शीतल मुखारविंद वाले श्रीशचीनन्दन को मैं प्रणाम करता हूँ ।। 5 ।।

धृत-कटि-डोर-कमण्डलु-दण्डं

दिव्य-कलेवर-मुण्डित-मुण्डम् ।

दुर्जन-कल्मष-खण्डन-दण्डं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तं प्रणमामि च श्रीशचींतनयम् ।। 6 ।।

कमर में डोर, हाथ में दण्ड एवं कमण्डल, मुड़ा हुआ सिर, दिव्य शरीर वाले श्रीशचीनन्दन ने दुर्जनों के पापों को दूर करने हेतु ही दण्ड धारण किया है, उनको मैं प्रणाम करता हूँ ।। 6 ।।

भूषण-भूरज-अलका-वलितं

कम्पित-बिम्बाधरवर-रुचिरम् ।

मलयज-विरचित-उज्ज्वल-तिलकं

तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ।। 7 ।।

धूल-धूसरित अलकावलियों, मधुर मनोहर लाल अधरों तथा उज्ज्वल चंदन तिलक से विभूषित श्रीशचीनंदन को मैं प्रणाम करता हूँ ।। 7 ।।

निन्दित अरुण-कमल-दल-नयनं

आजानुलम्बित-श्रीभुज-युगलम् ।

कलेवर-कैशोर-नर्तक-वेशं

तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम् ।। 8 ।।

कल कमल-पत्रों से सुन्दर नेत्र तथा सुदीर्घ सुन्दर भुजाओं वाले किशोर वपु एवं नर्त्तक वेषधारी श्रीशचीनन्दन को मैं प्रणाम करता हूँ ।। 8 ।।

+++++

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीनवद्वीपचन्द्रस्तवराज

कनक-रुचिर-गौरः सर्व-चित्तैक-चौरः
प्रकृति-मधुर-देहः पूर्ण-लावण्य-गेहः ।
कलित-ललित-रूपः क्षुब्ध-कन्दर्प-भूपः
स्फरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ।। 1 ।।

आप मनोहर स्वर्णमय गौरवर्ण सब प्राणियों के चित्त को चुराते हैं, आपके नैसर्गिक माधुर्यमय देह में लावण्य की परिपूर्णता है. आपकी अपरूप सुन्दरता से कामदेव भी व्याकुल है. हे नवद्वीपचन्द्र !कृपया मेरे हृदय में प्रकट होइये ।। 1 ।।

बहुल-चिकुर-बन्धः स्निग्ध-मुग्ध-प्रबन्धः
प्रसर-पुर-पुरन्ध्री-चित्र-सन्धान-मंत्री ।
विहित-विविध-वेश-द्योतिताशेष-देशः
स्फरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ।। 2 ।।

अपने चिकने घुँघराले घने केशों के जूड़े से मुग्ध होने वाली नगर की सुंदरियां आपको प्राप्त करने की मंत्रणा करती रहती हैं. आपके विविध प्रकार की वेशभूषा से शोभा का अनंत विस्तार हो रहा है. हे नटराज नवद्वीप चन्द्र ! मेरे हृदय में प्रकाशित होइये ।। 2 ।।

विकसित-शतपत्र-द्योति-विस्फारनेत्रः
प्रिय-मृदुल-पवित्र-स्निग्धदृक्-प्रेमपात्रः ।
अति-मधुर-चरित्रः प्रोल्लसच्चारु-गात्रः
स्फरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ।। 3 ।।

प्रफुल्लित कांतिमान विस्तृत नेत्रों से आप प्रेमी भक्तों पर प्रेममयी मधुर स्नेहपूर्ण द्रष्टिपात करते हैं. आपका देह उल्लास से गतिमान है तथा आपकी चरित्र माधुरी अनुपम है ।। 3 ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मलयज-करवीरश्चिद्विलासाति-धीरः
सुविमल-स्मितवक्त्रः प्रान्तवस्त्रानुरक्तः ।
रभसमय-विहारः पूर्णलीलावतारः
स्फरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ॥ 4 ॥

चन्दन युक्त, अति गंभीर किन्तु चैतन्य मुखारविंद पर निश्छल मृदु बोलन वस्त्र की लाल किनारी की भांति सुशोभित है. पूर्णलीलावतार श्रीनवद्वीपचन्द्र सदैव प्रेमरस में विहार करते हैं. ऐसे नटराज हमारे हृदय में उदय हों ॥ 4 ॥

सकल-रस-विदग्धः सर्वभार-प्रशुद्धः
सकल-सुख-विनोदः ख्यात-नृत्य-प्रमोदः ।
सकल-सुखद-नामा धन्य-तारुण्य-धामा
स्फरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ॥ 5 ॥

समस्त रसों में निपुण समस्त भावों में दक्ष, समस्त सुखों के आस्वादक तथा नृत्य में विख्यात श्रीनवद्वीपचन्द्र सकल सुखों को प्रदान करने में अपनी किशोरावस्था को धन्य कर रहे हैं ऐसे नटराज हमारे हृदय में प्रकाशित हों ॥ 5 ॥

अविरत-गलदस्त्रः प्रेमधारा-सहस्त्र-
स्नपित-सकल-देशः ख्यात- नामोपदेशः ।
भुवन-विदित-सर्व-प्राणि-निस्तार-गर्वः
स्फरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ॥ 6 ॥

अविरल प्रेमाश्रुओं की असंख्य धाराओं से जिनका समस्त शरीर अभिषिक्त है तथा भगवन्नाम के उपदेशक के रूप में विख्यात श्रीनवद्वीपचन्द्र समस्त प्राणियों के उद्धारक के रूप में सब लोग जिन्हें जानते हैं. ऐसे नटराज हमारे हृदय में प्रकट हों ॥ 6 ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घन-पुलक-कदम्बः स्थूल-मुक्ता-समाम्भः

स्नपिततर-हृदोरः प्रेम-हुङ्कार-घोरः ।

सदय-मधुर-मूर्तिर्विश्व-विख्यात-कीर्तिः

स्फुरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ।। 7 ।।

कदम्ब पुष्प के समान जिनकी रोमावली पुलकित हैं. बड़े-बड़े मोतियों के समान श्वेद बिंदु और हृदय प्रेमाश्रुओं से भीगा है एवं जो प्रेम हुंकार भरते हैं ऐसे सदय माधुर्य मूर्त्ति श्रीनवद्वीपचन्द्र की कीर्त्ति सम्पूर्ण जगत में व्याप्त है. ऐसे नटराज हमारे हृदय में प्रकाशित हों ।। 7 ।।

अखिल-भुवन-भर्ता दुर्गति-त्राण-कर्ता

कलि-कलुष-निहन्ता दीन दुःखैक-शान्ता ।

निरवधि-निजगाथा-कीर्तनानन्द-दाता

स्फुरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ।। 8 ।।

समस्त लोकों के पालक कष्टों के निवारक कलियुग के पापों को समाप्त करने वाले दीनजनों के दुखों को शांत करने वाले श्रीनवद्वीपचन्द्र सदैव भगवत लीला के कीर्त्तन से आनंद प्रदान करते हैं. ऐसे नटराज चैतन्य मेरे हृदय में प्रकट हों ।। 8 ।।

सुर-मुनिगण-बन्धुः प्रेमभक्त्येक-सिन्धुः

प्रकट-सुरभि-नन्द-श्रीलपादारविन्दः

नटन-मधुर-मन्दः सुप्रगाढ-प्रबन्धः

स्फुरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ।। 9 ।।

मुनियों तथा देवताओं के मित्र, प्रेमाभक्ति के सागर जिनके चरणकमलों से आनंदरूपी सुगंध प्रकट हो रही हो. ऐसे नवद्वीपचन्द्र मधुर मन्द नर्त्तन खवं गम्भीर गायन में निमग्न हैं वे नटराज मेरे हृदय में प्रकट हों ।। 9 ।।

सकल-निगम-सारः प्रेम-पूर्णावतारः

प्रचुर-गुण-गभीरः सर्व-सन्धान-धीरः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अधम-पतित-बन्धुः पूर्ण-कारुण्य-सिन्धुः

स्फुरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ।। 10 ।।

समस्त वेदों से प्रतिपादित पूर्ण प्रेमावतार, समस्त दैवीय गुणों की जिनमें प्रचुरता है एवं जो समस्त तत्त्वों के अन्वेषण में दत्तचित्त हैं. नीच एवं पापीजनों के जो मित्र हैं एवं पूर्ण करुणा के सागर नटराज श्रीनवद्वीपचन्द्र मेरे हृदय में प्रकट हों ।। 10 ।।

मधुरमणि मनोज्ञस्ताण्डवाद्यन्त-विज्ञ-

स्तरुणिमणि विचित्रः प्रेम-निस्तार-पात्रः ।

महिमनि निजनाम-ग्राहि-सम्पूर्ण-कामः

स्फरतु हृदि नटेन्द्रः श्रीनवद्वीपचन्द्रः ।। 11 ।।

मधुरमणि श्रीकृष्ण में अनुरक्त ताण्डव आदि नृत्यों के ज्ञाता, तरुणिमणि राधा के विचित्र प्रेम का आस्वादन करने वाले महिमान्वित प्रभुनाम को गृहण कर समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाले श्रीनवद्वीपचन्द्र मेरे हृदय में प्रकट हों ।। 11 ।।

श्रीगौराङ्ग-नटेन्द्रस्य स्तुतिमेतामभीष्टदाम् ।

यः पठेत् परमप्रीतः स प्रेमसुखभाग् भवेत् ।। 12 ।।

नटराज श्री गौरांग महाप्रभु की यह स्तुति वांछित फल प्रदान करती है. जो इस स्तोत्र का परम प्रेम पूर्वक पाठ करता है वह प्रेममय सुख से परिपूरित होता है ।। 12 ।।

[श्री रघुनन्दन ठाकुर विरचित]

+++++

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीगौराङ्ग महाप्रभु की आरती

जय शचिनन्दन गौरहरि, जय माला धारी ।
जय नवद्वीप बिहारी, जय कलमष हारी ।।
बाल सखा संग सोहे, तिलक भाल राजे ।
झाँझ मृदङ्ग विराजे, मधुर मधुर बाजे ।।
प्रभु जय माला धारी ।।
गोल कपोल मनोहर, कमलनयन प्यारे ।
शोभा अकथ अलौकिक, वरणत कवि हारे ।।
प्रभु जय माला धारी ।।
केशों का सिर मुकुट विराजे, गुँथि फूलन माला ।
वशीकरण चितवन है, जगन्नाथ लाला ।।
प्रभु जय माला धारी ।।
मृदु मुसकान सुहाये, पीताम्बर शोभा ।
भुजा विशाल उठाये, दर्शक मन लोभा ।।
प्रभु जय माला धारी ।।
नित्यानन्द, गदाधर, सीतापति सोहे ।
हरेकृष्ण की ध्वनि से, त्रिभुवन मन मोहे ।।
प्रभु जय माला धारी ।।
गौरकिशोरकी आरति जो कोई नर गावें ।
मधुर रंग-रस भीजें, प्रेम रतन पावें ।।
प्रभु जय माला धारी ।।

+ + + + +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महाप्रभु ! तुम परम उदार ।
अद्‌भुत रीति तुम्हारी देखी, पतितन के तुम अति रिझवार ।।
ये ही आसा लागि रही प्रभु, और न कछू मेरौ आधार ।
'जगन्नाथ' प्रभु किरपा दीजै, प्रेम दान विस्तार ।।

+++++

अब तौ हरिनाम लौ लागी ।
सब जग को यह माखन चोरा, नाम धर्‌यो बैरागी ।।
कित छोड़ी वह मोहन मुरली, कित छोड़ी सब गोपी ।
मूंड़ मुड़ाय डोरि कटि बाँधी, माथे मोहन टोपी ।।
मात यशोमति माखन कारण, बाँधे जाके पाँव ।
श्याम किशोर भयो नव गोरा, चैतन्य जाको नाँव ।।
पीताम्बर को भाव दिखावै, कटि कोपीन कसै ।
गौर - कृष्ण की दासी 'मीरा', रसना कृष्ण बसै ।।

+++++

सुन्दर लाला शचीर - दुलाला, नाचत श्रीहरि कीर्त्तन में ।
भाले चन्दन तिलक मनोहर, अलका शोभे कपोलन में ।।
शिरे चूड़ा दरशावे, वन फूलमाला हिया पर दोले ।
पहिरण पीत पटाम्बर शोभे, नूपुर रुणझुनु चरणन में ।।
कोई गायत राधा-कृष्णनाम, कोई गायत है हरिगुण गान ।
मृदङ्ग ताल-मधुर रसाल, कोई गायत है रङ्गन में ।।
सुन्दर लाला शचीर-दुलाला, नाचत श्रीहरि कीर्त्तन में ।।

+++++

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जय माधव मदन मुरारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ।
जय केशव कलिमल हारी, राधेश्याम श्यामा श्याम ।।
सुन्दर कुण्डल नयन विशाला, गले सोहे वैजन्ती माला ।।
या छवि की बलिहारी ।। राधेश्याम . . .
कबहूँ लूट लूट दधि खायो, कबहूँ मधुवन रास रचायो ।
नृत्यति विपिन विहारी ।। राधेश्याम . . .
ग्वाल बाल संग धेनु चराई, वन वन फिरत फिरे यदुराई ।
काँधे कामर कारी ।। राधेश्याम . . .
चुरा चुरा नवनीत जो खायो, व्रजवनितन पै नाम धरायो ।
माखन चोर मुरारी ।। राधेश्याम . . .
एक दिन मान इन्द्र को मार्‍यो, नख ऊपर गोवर्धन धार्‍यो ।
नाम पड़्यो गिरधारी ।। राधेश्याम . . .
दुर्योधन को भोग न खायो, रूखो साग विदुर घर खायो ।
ऐसे प्रेम पुजारी ।। राधेश्याम . . .
करुणा कर द्रोपदी पुकारी, पट में लिपट गये वनवारी ।
निरख रहे नर नारी ।। राधेश्याम . . .
भक्त, भक्त सब तुमने तारे, बिना भक्त हम ठाड़े द्वारे ।
लीजो खबर हमारी ।। राधेश्याम . . .
अर्जुन के रथ हाँकन हारे, गीता के उपदेश तुम्हारे ।
चक्र सुदर्शन धारी ।। राधेश्याम . . .

+++++

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भज गोपालं दीन दयालं वचन रसालं तापहरम् ।
सुन्दर वनमालं, नयन विशालं, रूप रसालं चित्तहरम् ॥
वारिज वदनं, लज्जित मदनं, आनन्द सदनं प्रेमधरम् ।
मोहन घनश्यामं, नयनाभिरामं, लावण्यधामं चन्दवरम् ॥
मोहनलीलं, करुणाशीलं, रसघन लीलं धामपरम् ।
वेणु प्रवीणं, नित्यनवीनं, प्रियजन दीनं देव परम् ॥

+++++

जय जय जगन्नाथ शचीरनन्दन, त्रिभुवन करे जार चरण वन्दन ॥
नीलाचले शंख-चक्र-गदा-पद्म धर, नदिया नगरे दण्डकमण्डलु कर ।
केह कहे पूरवेते रावण बधिला, गोलोकेर वैभव लीला प्रकाश करिला ॥
श्रीराधारभावे एवे गोरा अवतार, हरे कृष्ण नाम गौर करिला प्रचार ।
'वासुदेवघोष' वले करि जोड़ हाथ, जेई गौर, सेई कृष्ण, सेई जगन्नाथ ॥

श्रीकृष्णचैतन्य गौरा शचीर दुलाल ।
एई से पूरबे छिल गोकुलेर गोपाल ॥
केह वले जानकी-वल्लभ छिल राम ।
केह बले नन्दलाल नवघन श्याम ॥
पूरवे कालिया छिल गोपी प्रेमे मोरा ।
भाविया राधार वरण एवे हइल गोरा ॥
छल छल अरुण नयन अनुरागी ।

आम्नाय-ग्रन्थालय
भरतनिधि, कचौड़ी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ना पाइया भावेर ओर हइल वैरागी ।।

संन्यासी वैरागी हैया भ्रमे देशे देशे ।

तभूना पाईल राधार प्रेमेर उद्देशे ।।

'गोविन्ददासिया' कय किशोरी किशोरा ।

स्वरूप रायेर सने सेइ रस मोरा ।।

\+ + + + +

श्रीगुरुदेवाष्टकम्

संसार - दावानल - लीढ - लोक

त्राणाय कारुण्य - घनाघनत्वम् ।

प्राप्तस्य कल्याण - गुणार्णवस्य

वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ।। 1 ।।

संसार के दावानल से सन्तप्त जनमानस को अपनी दया की वर्षा से रक्षा करने वाले सद्गुण सागर श्री गुरुदेव के शोभायमान चरणकमलों की हम वन्दना करते हैं ।। 1 ।।

महाप्रभोः कीर्त्तन - नृत्य - गीत-

वादित्र - माद्यन्मनसो रसेन ।

रोमाञ्च - कल्पाश्रु - तरङ्गभाजो

वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ।। 2 ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महाप्रभु श्रीकृष्णचैतन्यदेव के नाम सकीर्त्तन, नृत्य, एवं गायन-वादन से प्रेम रस के मानस समुद्र में उत्पन्न रोमांच, कम्पन, अश्रु आदि सात्विक विकारों का अनुभव करने वाले श्री गुरुदेव के चरणारविन्दों की हम वन्दना करते हैं ।। 2 ।।

श्रीविग्रहाराधन नित्य नाना

श्रृङ्गार - तन्मन्दिर मार्जनादौ ।

युक्तस्य भक्ताञ्च नियुञ्जतोऽपि

वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ।। 3 ।।

इष्टदेव राधाकृष्ण के श्रीविग्रह का आराधनं, नित्यप्रति विविध प्रकार से श्रृंगार, एवं उनके मन्दिर का मार्जन आदि सेवक भाव से स्वयं करते हुए अधिकारी भक्तों को इस सेवा में दत्तचित्त करने वाले श्री गुरुदेव के चरणारविन्दों की हम वन्दना करते हैं ।। 3 ।।

चतुर्विध - श्रीभगवत् - प्रसाद-

स्वाद्वन्न - तृप्तान् हरिभक्ति-सङ्घान् ।

कृत्वैव तृप्ति भजतः सदैव

वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ।। 4 ।।

श्रीकृष्णभक्तों को चारों प्रकार के श्रीभगवत्प्रसादमय सुस्वाद अन्न के द्वारा सदैव तृप्त करके तथा स्वयं भी तृप्त होने वाले श्री गुरुदेव के शोभायमान चरणारविन्द की हम वन्दना करते हैं ।। 4 ।।

श्रीराधिकामाधवयोरपार

माधुर्य लीला गुण-रूप-नाम्नाम् ।

प्रतिक्षणा - स्वादन - लोलुपस्य

वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ।। 5 ।।

अपने परमाराध्य श्रीराधामाधव की अनन्त माधुर्यमयी लीलाओं, गुणों, रूप एवं नामों का प्रतिपल आस्वादनकरने को लालायित श्री गुरुदेव के चरणकमलों की हम वन्दना करते हैं ।। 5 ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निकुञ्ज-यूनो रति-केलि-सिद्ध्यै

या यालिभिर्युक्तिरपेक्षणीया ।

तत्राति - दाक्ष्यादति - वल्लभस्य

वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ।। 6 ।।

निकुञ्जविहारी युगलकिशोर की रतिक्रीड़ा की सिद्धि ललितादिक सखियों की युक्तियों को अत्यन्त चतुरता से अपनाकर अपने आराध्य को आप सन्तुष्ट करते हैं. ऐसे श्री गुरुदेव के चरणारविन्द की हम वन्दना करते हैं ।। 6 ।।

साक्षाद्धरित्वेन समस्त - शास्त्रै-

रुक्तस्तथा भाव्यत एव सद्भिः ।

किन्तु प्रभोर्यः प्रिय एव तस्य

वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ।। 7 ।।

सन्त जन श्री गुरुदेव को शास्त्र की मर्यादा के अनुरूप साक्षात् श्रीहरि के स्वरूप में ही अनुभव करते हैं. तथापि भगवान के अत्यन्त प्रिय उन श्री गुरुदेव के श्रीचरणारविन्दों की हम वन्दना करते हैं ।। 7 ।।

यस्य प्रसादाद् भगवत्प्रसादो

यस्याप्रसादान्न गतिः कुतोऽपि ।

ध्यायंस्तुवंस्तस्य यशस्त्रिसन्ध्यं

वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम् ।। 8 ।।

जिनकी प्रसन्नता से भगवान प्रस्न्न होते हैं और जिनके अप्रसन्न होने से कहीं भी कोई गति नही है. त्रिकाल संध्या में उनके यश का ध्यान वं स्तुति करते हुए हम उन श्रीगुरूदेव के चरणारविंदों की वन्दना करते हैं ।।8।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीमद् गुरोरष्टकमेतदुच्चै-
ब्राह्मे- मुहूर्ते पठति प्रयत्नात् ।
यस्तेन वृन्दावन-नाथ-साक्षात्-
सेवैव लभ्या जनुषोन्त एव ।। 9 ।।

जो व्यक्ति ब्रह्ममुहूर्त्त में उच्च स्वर से भक्तिपूर्वक इस श्रीगुरुदेवाष्टक का पाठ करता है वह देहावसान के बाद श्रीवृन्दावनेश्वर की नित्यलीला में प्रविष्ट हो जाता है ।। 9 ।।

श्रीगुरु वन्दना

आश्रय करिया बंदो श्री-गुरु चरन ।
जाहा हैंते मिले भाई कृष्ण प्रेमधन ।।
जीवेर निस्तार लागि नन्द सुत हरि ।
भुवने प्रकाश हन गुरु रूप धरि ।।
महिमाय गुरु कृष्ण एक करि ज्ञान ।
गुरु आज्ञा हृदे सब सत्य करि मान ।।
सत्य ज्ञाने गुरु-वाक्ये जाहार विश्वास ।
अवश्य ताहार हय व्रजभूमि वास ।।
जार प्रति गुरुदेव हन परसन्न ।
कोन विघ्ने सेह नाहि हय अवसन्न ।।
कृष्ण रूष्ट हले गुरु राखिवारे पारे ।
गुरु रुष्ट हले कृष्ण राखिवारे नारे ।।
गुरु माता गुरु पिता गुरु हन पति ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरु बिना ए संसारे नाहि आर गति ।।
गुरु के मनुष्य ज्ञान ना कर करवन ।
गुरु निन्दा कभू कर्णे ना कर श्रवन ।।
गुरु निन्दकेर मुख कभू ना हेरिवे ।
जाहां हय गुरु निन्दा तथा ना जाइवे ।।
गुरुर विक्रिया जदि देखह करवन ।
तथापि अवज्ञा नाहि कर कदाचन ।।
गुरु पाद पद्मे रहे जार निष्ठां भक्ति ।
जगत तारिते सेई धरे महाशक्ति ।।
हेन गुरु पाद पद्म करह वन्दना ।
जाहा हैते घूचे भाई सकल जन्त्रणा ।।
गुरु पाद पद्म नित्य जे करे वन्दन ।
शिरे धरि वन्दि आमि ताहार चरन ।।
श्री गुरु चरन पद्म हृदे करि आश ।
श्री गुरु वन्दना करे 'सनातन दास' ।।

+ + + + +

राम तजूं पै गुरु नं बिसारूँ, गुरु के सम हरि को नहिं जानूँ ।।
हरि ने जनम दियो जग माँही, गुरु ने आवागमन मिटाही ।
हरि ने कुटुव जाल में घेरी, गुरु ने काटी ममता बेरी ।।
हरि ने रोग भोग उरझायो, गुरु ज्ञानी करि सबै छुड़ायो ।
हरि ने म्हाँसू आप छिपायो, गुरु दीपक ले ताहि दिखाये ।।
हरि ने करम भरम भरमायो, गुरु ने आतम रूप लखवायो ।
फिर हरि बंध मुक्ति गति लाये, गुरु ने सबही भरम मिटाये ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरु चरनन पै सरबस वारूँ, गुरु न तजूँ पै हरि तजि डारूँ ॥

+++++

श्रीगौराङ्गमहाप्रभु-प्रणामः

आनन्दलीलामयविग्रहाय

हेमाभदिव्यच्छविसुन्दराय ।

तस्मैमहाप्रेमरसप्रदाय

चैतन्यचन्द्राय नमो नमस्ते ॥ 1 ॥

दिव्यस्वर्णकान्ति युक्त जिनकी सुन्दर छवि है तथा लीलामय आनन्दविग्रह महाप्रेम रसदाता श्रीचैतन्यचन्द्र को बारंवार प्रणाम है ॥ 1 ॥

नमस्त्रिकालसत्याय जगन्नाथसुताय च ।

सभृत्याय सपुत्राय सकलत्राय ते नमः ॥ 2 ॥

भूत-भविष्य और वर्तमान में नित्य सत्य जीवों के उद्धारक जगन्नाथसुत श्रीचैतन्य आपको मैं पार्षदों एवं भक्तों सहित पुनः-पुनः प्रणाम करता हूँ ॥ 2 ॥

+++++

भज बालकृष्ण नन्दलाल, गोविन्द गिरधारी ।

भज श्यामसुन्दर घनश्याम मोहन वनवारी ॥

हरि मथुरा लियो अवतार, गोविन्द गिरधारी ।

थारी महिमा अपरम्पार, गोविन्द गिरधारी ॥

मथुरा में हरि जन्म लियो है, गोकुल में पगधार ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बालपनें हरि मटिया खाई, मात यशोदा पूछन आई ।
मुख में तीन लोक दर्शाय ।। गोविन्द . . .
गोपियन के घर माखन खायो, ठमुक ठमुक नन्दलाल ।।
हरि नाच नाच नाच नन्दलाल ।
ग्वाल बाल संग धेनु चरावै, बंशी बजावै नन्दलाल ।।
वृन्दावन में रास रच्यौ है, सहस्त्र गोपी एक लाल ।
भक्त विदुर घर छिलके खाये, हँस हँस के नन्दलाल ।।
ब्रज पर इन्द्र कोप कियो है, बर्षत मूसलधार ।
बर्ष -२ कर हार गयी है, नख पर गिरवरधार ।।
काली दह में कूद गयो है, नाग लियो है नाथ गो ।
मेरी नैया पड़ मझधार ।।

+ + + + +

श्री श्रीराधारमण जी की सन्ध्या आरती

श्रीराधारमण लाल जै जै, जय श्री भट्ट गोपाल ।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, उर बैजन्ती माल,
शोभा उर बैजन्ती माल, प्राणधन श्री राधारमण . . .
कानन में मकराकृत कुण्डल, बैणी झलके भाल,
शोभा बैंणी झलके भाल, प्राणधन श्रीराधारमण . . .
घूँघर वाली अलकें झलकें, बाँके नैन विशाल,
शोभा मोहीं बृज की बाल, प्राणधन श्रीराधारमण . . .
कटि किंकणि पग नूपुर बाजै, मुरली अधर रसाल,
बाजे बन्शी अधर रसाल, प्राणधन श्रीराधारमण . . .
श्रीवृन्दावन की कुञ्जगलिन में चालत चाल मराल,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शोभा चालत चाल मराल, प्राणधन, श्रीराधारमण . . .
संग संग श्रीगोपालभट्टजू झलकत प्रेम रसाल,
बलिजाऊँ झलकत प्रेमरसाल, प्राणधन श्रीराधारमण . . .
श्रीगोपीनाथ प्रभू की छवि निरखत भक्तन के प्रतिपाल,
शोभा दासन के प्रतिपाल, प्राणधन श्रीराधारमण . . .
प्यारो श्रीराधारमणलाल जय जय जय श्रीभट्टगोपाल,
जय श्रीवृन्दावन रसिक रसाल ।
हरे हरे श्रीवृन्दावन रसिक रसाल, प्राणधन श्रीराधारमण . . .
श्रीचैतन्यजीव उरमाल, श्रीरूप सनातन प्रेम रसाल,
हरे हरे भक्त सनातन प्रेमरसाल, प्राणधन, श्रीराधारमण . . .
इनकी पदरज धारूँ भाल, श्रीगोपीनाथ प्रभु करत निहाल,
श्रीराधारमण प्यारो करत निहाल, प्राणधन, श्रीराधारमण . . .

।। श्रीराधारमणलाल जी की जय ।।

+ + + + +

आरती कुंजविहारी की

आरती कुंजविहारी की ।
श्रीगिरधर कृष्ण मुरारी की ।।
गले में बैजंती माला, बजावें मुरलि मधुर बाला,
श्रवन में कुंडल झलकाला, नंद के आनंद नंदलाला,
श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की ।
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली,
लतन में ठाड़े वनमाली,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक, चन्द्र सी झलक,

ललित छवि श्यामा प्यारी की, श्रीगिरधर कृष्ण मुरारी की ।

कनकमय मोर-मुकुट बिलसे, देवता दरसन को तरसे,

गगन सों सुमन रासि बरसे,

बजे मुहचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालनी संग,

अतुल गति गोपकुमारी की, श्रीगिरधर कृष्ण मुरारी की ।

जहाँ ते प्रकट भई गंगा, कलुष कलि हारिणी श्रीगंगा,

स्मरन ते होत मोह-भंगा,

बसी शिव सीस, जटा के बीच, हरे अघ कीच,

चरनछबि श्रीबनवारी की, श्रीगिरधर कृष्ण मुरारी की ।

चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही वृन्दावन बेनू,

चहुँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू,

हँसत मृग मंद, चांदनी चंद, कटत भव फंद,

टेर सुन दीन भिखारी की, श्रीगिरधर कृष्ण मुरारी की ।

आरती कुंजविहारी की ।

श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की ॥

श्रीतुलसी-आरती

नमो नमो तुलसी महारानी,वृन्दे महारानी ॥

नमो नमो.....

नमो रे नमो मैया नमो नारायणी ॥

नमो नमो.....

जाकौ दरष परस अघ नासइ,महिमा वेद पुराण बरवानी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाकौ पत्र मञ्जरी कोमल,श्रीपति चरण कमल लपटानी ।।
(राधापति चरण कमल लपटानी)
नमो नमो .....

धन्य तुलसी पूरन तप कीने, (श्री) शालिग्राम की महापटरानी ।
नमो नमो .....

धूप दीप नैवेद्य आरती, फूलन की बरखा बरखानी ।।
छप्पन भोग छत्तीसों व्यञ्जन, बिन तुलसी प्रभु एक ना मानी ।
नमो नमो . . . . .
शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक, ढूँढ़त फिरत महामुनि ज्ञानी ।।
'चन्द्रसखी' मैया तेरौ यश गावै, भकति दान दीजै महारानी ।।
नमो नमो . . . . .

\+ + + + +

नमो नमो तुलसी कृष्ण प्रेयसी ।
राधाकृष्ण सेवा पावौ एइ अभिलाषि ।। (नमो नमो)
जे तोमार शरण लय तार वाञ्छा पूर्ण हय ।
कृपा करि करौ तारे वृन्दावन वासी ।। (नमो नमो)
एइ निवेदन धर सखीर अनुगा कर ।
सेवा अधिकार दिये कर निज दासी ।। (नमो नमो)
मोर मने एइ अभिलाष विलास कुञ्जे दीवे वास ।
नयने हेरवो सदा युगल रूप रासि ।। (नमो नमो)
'दीन कृष्णदासे' कय एइ जेन मो र हय ।
श्रीराधागोविन्द प्रेमे सदा अभिलाषि ।। (नमो नमो)

\+ + + + +

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीमद्भागवत की आरती

आरती अतिपावन पुरान की ।
धर्म - भक्ति - विज्ञान - खान की ।। आरती . .

महापुरान भागवत निरमल ।
शुक-मुख-विगलित निगम कल्प फल ।
परमानन्द - सुधा - रसमय कल ।

कलि मल मथन त्रिताप - निवारिनि ।
जन्म-मृत्युमय भव - भय - हारिनि ।
सेवत सतत सकल सुखकारिनि ।
सुमहौषधि हरि- चरित - गान की ।। आरती . . .

विषय - विलास-विमोह-विनाशिनि ।
विमल विराग विवेक विकासिनि ।
भगवत तत्त्व - रहस्य प्रकाशिनि ।
परम ज्योति परमात्म - ज्ञान की ।। आरती . . .

परमहंस - मुनि - मन उल्लासिनि ।
रसिक - हृदय रस - रास विलासिनि ।
भक्ति, मुक्ति, रति प्रेम सुदासिनि ।।
कथा अकिञ्चनप्रिय सुजान की ।। आरती . . .

+ + + + +

आम्नाय-ग्रन्थालय, भरतनिधि, रांची, वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi